तृतीय अध्याय

प्रभा खेतान के उपन्यासों में पात्र एवं चरित्र चित्रण

3.1 नारी पात्र

3.1.1. प्रमुख नारी पात्र

3.1.2. गौण नारी पात्र

3.2. पुरूष पात्र

3.2.1. प्रमुख पुरूष पात्र

3.2.2. गौण पुरूष पात्र

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय

प्रभा खेतान के उपन्यासों में पात्र एवं चरित्र चित्रण

प्रस्तावना-

उपन्यास आधुनिक साहित्य की एक सशक्त एवं लोकप्रिय विधा है। साहित्यिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इसका महत्व अधिक है। मानव जीवन के प्रत्येक रूप को प्रदर्शित करने की जितनी शक्ति उपन्यास में है उतनी अन्य किसी विधा में नहीं। उपन्यास की पारंपारिक संरचना में चरित्र चित्रण को विशेष महत्व प्राप्त है। उपन्यास में जीवन की जटिलता तथा संघर्षों को पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। उपन्यास के पात्र हमें जीवन की सच्चाईयों से रूबरू कराते हैं। वास्तव में उपन्यास में उपन्यासकार मनुष्य के जटिल जीवन को समझने-समझाने का प्रयत्न करता है। पात्रों के माध्यम से उपन्यासकार अपने उपन्यासों में सामाजिक क्रिया-कलापों और संघर्षों को प्रस्तुत करता है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने कहा हैं- "उपन्यासकार के पात्रों में सजीवता और स्वाभाविकता सदा अपेक्षित है।"[1] उपन्यास का केंद्रबिंदू मानव चरित्र है। उपन्यासकार अपने सामाजिक दर्शन और अनुभव संपन्नता से उपन्यास के पात्रों को सजीव बनाता है। पात्र जितने अधिक सजीव और यथार्थ होंगे, कथानक भी उतना ही प्रभावी होगा।

डॉ.प्रतापनारायण टंडन ने उपन्यास के पात्रों की सजीवता के बारे में लिखा है, "यदि किसी कृति के पात्रों में सजीवता अथवा सशक्तता के गुण विद्यमान होते हैं, तो वह पाठक के ह्रदय पर भारी प्रभाव डालते हैं।"[2] चरित्र एक प्रकार की बौद्धिक, भावुक और हताश आदतों का संमिश्रण है। डॉ.रवींद्रकुमार जैन के अनुसार उत्कृष्ट चरित्र-चित्रण वह है- "जो सच्ची मनोभूमि से उद्भुत हो, आंतरिक हो, मुक्त हो, किंतु जिसमें इतनी सजीवता, स्पष्टता और सहजता भी हो वह प्रत्येक पाठक के मनोलोक को भी झकृंत और अलंकृत कर सके।"[3]

चरित्र-चित्रण में अनुकूलता, स्वाभाविकता, यथार्थता, अंर्तद्वंद्व एवं बौद्धिकता आदि गुणों का होना अनिवार्य माना जाता है। सामान्य रूप से पात्रों को दो वर्गों में

विभाजित किया जाता है। जिसमें उपन्यास का मूल अभिप्राय केंद्रित होता है और जो उपन्यास में गति का स्रोत माना जाता है वह प्रमुख पात्र है तथा जिनका महत्व बहुत कुछ घटनाओं को आगे बढ़ाना तथा ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करना होता है जो मुख्य पात्र या नायक के विकास में सहायक हो वे गौण पात्र कहलाते हैं।

अत: हम प्रभा खेतान के पात्रों का वर्गीकरण-

1. नारी पात्र
   क) प्रमुख नारी पात्र
   ख) गौण नारी पात्र
2. पुरूष पात्र
   अ) प्रमुख पुरूष पात्र
   आ) गौण पुरूष पात्र

इस प्रकार करेंगे। लेखिका के सभी पात्र अपनी चारित्रिक विशेषताओं से संपन्न हैं। इन पात्रों में कर्तव्यनिष्ठता, धर्मभीरूता, सत्यनिष्ठता, संस्कारहीनता, आदर्शवाद, विद्रोह, देशभक्त, स्त्री लंपट, भ्रष्टाचारी, त्यागी एवं शोषित आदि विशेषताएँ दिखाई देती हैं।

प्रथमत: हम उनकी नारी पात्रों का विस्तार से परिचय देखेंगे क्योंकि उनके बहुतांश उपन्यास नारी प्रधान है।

3.1.प्रमुख नारी पात्र-

प्रभा खेतान के प्रमुख नारी पात्र आज की नारी को उसके अस्तित्व की लड़ाई लड़ने का संदेश देते है। उनमे आत्मनिर्भरता एवं स्वाभिमान है। 'आओ पेपे, घर चलें' की नायिका **प्रभा** है। वह उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद कॉलेज में नौकरी कर सादगी पूर्ण जीवन बिताना अपना लक्ष्य नहीं मानती। वह ढ़ेर सारा रूपया कमाकर अपनी ही जमीन पर अपने ही मारवाड़ी समाज से लड़ना चाहती है। वह अपने अस्तित्व स्थापन के लिए आर्थिक रूप में स्वतंत्रता हासिल करने के लिए क्रियाशील हो जाती है। पारिवारिक मर्यादाओं का उल्लंघन कर प्रभा अपने जीवन को अपने तरीके से जीती है। स्वाभिमानी प्रभा को मरील द्वारा पहनने दिए गए पुराने कपड़े

देख गुस्सा आता है। वह कहती है- "तुम क्या सोचती हो, मैं भिखमंगी हूं ? क्लारा ब्राऊन के उतारे हुए कपड़े पहनूंगी? ग्रेटा गारबो से टिप लूंगी? मिसेज डी की सेक्रेटरी की मेहरबानी पर पलूंगी? क्या समझा है तुम लोगों ने? रूपये का अवमूल्यन हो गया, विदेशी मुद्रा हमारे देश से नहीं आ पा रही, पर क्या मेरा कोई आत्मसम्मान नहीं है?"[4] प्रभा को अमरिका में डालर की बेहद जरूरत है लेकिन वह अपना आत्मसम्मान खोकर उसे प्राप्त नहीं करना चाहती।

प्रभा को खतरों से डर नहीं लगता। वह खतरों का सामना डटकर करती है। अपने परंपरावादी मारवाड़ी समाज से सामना करने हेतु वह भारत वापस आने का निश्चय करती है। प्रभा अमरिका की चकाचौंध, जीवन पद्धति, पार्टी में सुरा-सुंदरी और पानी की तरह बहता पैसा देखकर कभी मोहित नहीं होती। अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम उसकी नस-नस में भरा है, तभी तो मरील और हेल्गा के पार्टनर बनने के प्रस्ताव को नकार कर अपने मन की बात प्रभा तटस्थ एवं सटीक शब्दों में कहती है- "सुनो, तुम मुझे करोड़ों की दौलत भी दो तो भी विदेश की जमीन पर मैं नहीं रह सकती।"[5]

लेखिका ने प्रभा के माध्यम से ऐसी नारी का चित्र खड़ा करना चाहा है, जो आर्थिक स्वतंत्रता को महत्व देकर अपनी अलग पहचान बनाने की प्रेरणा देती है। नारी में कुछ करने की चाह पैदा कर देश प्रेम के महत्व को भी समझाती है। उसमें स्वाभिमान, आत्मविश्वास, नया सीखने की चाह, संस्कार तथा प्रेम दिखाई देता है।

आइवी इसी तरह की पात्र है। 'अग्निसंभवा' में गरीब किसान की बेटी आइवी प्राथमिक शिक्षा ही प्राप्त कर पाती है। वह चीन में पीपल्स पब्लिक ऑफ चाइना की स्थापना से अपने आपको माओवादी बना लेती है। स्थापना से ही वह नीली पैंट और कमीज के अलावा दूसरा वस्त्र नहीं पहनती। यहाँ तक की अपनी शादी पर भी नहीं। शादी के बाद शराबी पति से हररोज की अनबन से मुक्ति पाने हेतु वह तलाक ले लेती है। आइवी का मन माओ का परमभक्त बनता है और साम्यवाद की नींव को मजबूत करने के सपने भी देखता है। नई तकनीक और कम्पनियों के माध्यम से पैर फैलाता पूंजीवाद उसके मन को मोहित करता है। आइवी का कथन है- "मैं चीन के साथ हूं। मगर हमारे देश में आर्थिक प्रगति होनी चाहिए। यह प्रगति हाँगकाँग ही ला

सकता है। बिना आर्थिक प्रगति के कैसा मार्क्सवाद...?"[6] माओ की सांस्कृतिक क्रांति में भाग लेने वाली आइवी ने जब उसी जमीन पर भ्रष्टाचार और राष्ट्रविरोधी कार्यों को होते देखा तो उसका व्यथित मन कह उठा कि क्या यही माओ का चीन है? वह संकल्प करती है कि मुझे इस भ्रष्टाचार से बाहर निकलना है और वह हाँगकाँग चली आती है।

आइवी को चीन के प्रति बेहद लगाव है। इसलिए वह अपने बेटे वॉग को बीजिंग विश्वविद्यालय पढ़ने भेजती है। वह कहती है, "कौन अपने देश को प्यार नहीं करता ?" [7] लेकिन वहाँ पर वॉग की मौत हो जाती है। इस दुख से आइवी का मन तार-तार हो जाता है। मगर वह दुनिया को अपने मन के दरवाजे खोलकर नहीं दिखाती। वह इस रंग भरी दुनिया में पंख लगाकर उड़ना चाहती है। वर्तमान में विश्वास रखने वाली यह औरत बीते हुए वक्त के लिए रोना बिसूरना बेवकूफी मानती है। वह प्रभा से कहती है- "देखो प्राफा, जो चला गया उसके लिए मैं नहीं सोचना चाहती। जो सामने है उसमें जीना चाहती हूँ।"[8]

वॉग के मरने के बाद आइवी शिव के बेटे बॉब का पालन-पोषण करती है और उसी में अपना जीवन खोजती है। उसे मेहनत की रोटी में आनंद मिलता है। वह शरीर व्यापार के लिए औरत को जिम्मेदार मानती है। वह कहती है, "नहीं, यदि औरत अपने को नीचे न गिराये तो दुनिया में किसी की हिम्मत नहीं कि उसके कंधों पर हाथ रख दे।"[9]

आइवी उस स्त्री वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रही है जो शोषण की चक्की में बार-बार पीसी जाती रही है। दोहरे शोषण से गुजरना और फिर भी साबुत बचे रहना यह आइवी के जीवन से सिद्ध होता है। वह सिर्फ अपनों के लिए नहीं जीती वह खुद से भी बेहद प्यार करती है। उसके जीवन में विराम नहीं आता, चाहे कुछ भी घट जाए। मेहनती आइवी अपने बलबूते पर शिव के जालसाजी की पोल खोलकर गरीब मजदूर से ब्राँच मॅनेजर तक का सफर तय करती है।

उसके संघर्षमय रूप को देखकर डॉ.उषाकीर्ति राणावत लिखती है- "आइवी अपनी अस्मिता की सीमाओं का अतिक्रमण कर धुआँ रहित अग्नि की लपटों को अपने

भीतर स्वीकारती है। प्रज्वलित होकर एक नए हशिए पर एक भिन्न प्रकार का आकार बनाती जाती है।"[10] वह औरत को काम करने की सलाह देने के साथ स्वावलंबन का महत्व भी सिखाती है। इस प्रकार आइवी मुँहफट, मेहनती, ईमानदार, संघर्षशील, सनकी, आत्मविश्वासी एवं देशप्रेमी स्त्री है।

गंभीर प्रवृत्ति वाली, आत्मनिर्भर, सिद्धांत वादी एवं शालीन **रेवा** 'तालाबंदी' में अपने भावों को अभिव्यक्त कर सामने वाले को बता देती है कि उसका भी वजूद है। सही बात कहने से न हिचकने वाली रेवा श्याम बाबू से कहती है, "यह तो आपको पहले सोचना चाहिए था, श्याम बाबू, सर्वनाश करके अब मातम मनाने आये हैं।"[11] शेखर मुखर्जी से प्रेम करने वाली रेवा शेखर को श्याम बाबू से समझौता करते देख भड़क उठती है। वह शेखर को पार्टी के सिद्धांत और प्रतिबद्धता की याद दिलाती है। वह उसे अपने कर्तव्य पर खरा उतरता हुए देखना चाहती है। लेखिका ने इस पात्र के माध्यम से नारीवाद को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया है।

'छिन्नमस्ता' की **प्रिया** विद्रोही, मेहनती, संघर्षशील, अदम्य साहसी, स्वाभिमानी, दृढ़निश्चयी, शोषित एवं नारी अस्मिता को प्राप्त करनेवाली पात्र है। प्रिया ने नारी के शोषण, उत्पीड़न और संघर्ष का जीवंत दस्तावेज पेश किया है। समाज की जर्जर मान्यताओं से और पुरुष की आदिम भूख से वह टूट जाने की हद तक सतायी जाती है। लेकिन टूटती नहीं है, बल्कि शोषण शक्तियों के लिए एक चुनौती बनकर खड़ी होती है। उसके सशक्त व्यक्तित्व के बारे में नगमा जावेद ने कहा है- "सारी रूढ़ियों, परंपराओं से लड़ती-भिड़ती वह अंततः अपनी खोई अस्मिता को न केवल प्राप्त करती है बल्कि अपनी अथक मेहनत, लगन और काबिलियत के बलबूते व्यापार के क्षेत्र में भी पुरुषों को बहुत पीछे छोड़कर अपना लोहा मनवा लेती है।"[12]

प्रिया के शोषण की कथा उसके घर से ही शुरू होती है। प्रिया को माँ का प्यार कभी नहीं मिला। अपने ही घर में उपेक्षित प्रिया माँ की नजर में बेवकूफ तो पिता की नजर में तेज लड़की है। पिता की असामायिक मृत्यु से प्रिया को असहाय, मजबूर बचपन बीताना पड़ता है। नौ वर्ष की उम्र में ही उसका बड़ा भाई उसपर शारीरिक अत्याचार करता है। अपने अकेलेपन को अर्थ देते हुए वह दाई माँ के सहारे

जीवन व्यतीत करती है। प्रो.मुखर्जी से छले जाने के बाद उसे प्रेम, विवाह, सेक्स सारे सदियों पुराने घिसे हुए शब्द लगने लगते हैं। उसकी शादी करोड़पति अग्रवाल के बेटे नरेंद्र से होती है। जो उसे मात्र भोग्य वस्तु मानकर उस पर अधिकार जताता है। नरेंद्र के व्यवहार को देख वह उससे संबंध विच्छेद कर लेती है। प्रिया बचपन से लेकर विवाह होने तक उत्पीड़ित ही रही। मेहनती एवं धुन की पक्की प्रिया समाज द्वारा चौखटे में फिट की गई स्त्री की भूमिका से बाहर निकलती है। वह छोटे स्तर से शुरू किए अपने व्यवसाय को अपनी लगन और कर्मनिष्ठता से फैलाती है। प्रिया सभी प्रकार के संघर्षों पर विजय प्राप्त कर दुर्गा बनकर समाज व्यवस्था की चौखट को तहस-नहस कर देती है। उनके संघर्षमयी जीवन को लेकर डॉ.मधु संधु लिखती है- "छिन्नमस्ता की प्रिया एक दहकता हुआ अंगारा है।"[13]

शोषित प्रिया धैर्य से काम लेती है। अपने कार्य की उत्कृष्टता के कारण वह भारत सरकार द्वारा सम्मानित की जाती है। प्रिया जीवन के लिए पैसा आवश्यक मानती है लेकिन पैसे के पीछे भागने और पैसा संचित करने की वृत्ति से उसे चिढ़ है। वह जीवन का लक्ष्य व्यक्तित्व विस्तार को मानती है। दर्शनशास्त्र में उच्च उपाधि प्राप्त कर प्रिया सफलता की सीढ़ियाँ तो चढ़ती है लेकिन अपने जीवन में वह ना बेटी, ना बहन, ना पति और ना ही माँ का सुख प्राप्त कर पाती है। वह अपनी प्रतिभा और संकल्प शक्ति से एक नई शक्ति और चुनौती के रूप में उभरती है। डॉ.रामचंद्र माली लिखते है- "सेक्स, संस्कार, संपत्ति या आर्थिक आत्मनिर्भरता से पुरुष के लिए परिवार की घुटन से जूझती 'छिन्नमस्ता' की प्रिया हिन्दी कथा नायिकाओं को सर्वथा नया आयाम देती है।"[14] इस तरह प्रिया परिस्थिति से लड़ने तथा पारिवारिक जीवन में बनते टूटते वैयक्तिक मूल्यों तथा संबंधों को एक नई दिशा देते हुए पाठक में संवेदना और प्रेरणा जगाने में समर्थ है।

प्रिया की तरह स्वतंत्रताप्रिय एवं प्रभावशाली प्रमुख नारी पात्र 'अपने-अपने चेहरे' की **रमा** मारवाड़ी परिवार में जन्मी एक होनहार लड़की है। माता-पिता की सबसे बड़ी संतान, जो पढ़ने के बाद स्वावलम्बी बनने की इच्छा के साथ सामाजिक संबंधों को नकारती हुई अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए घर से बाहर कदम रखती है।

मात्र टयुशन से शुरू किए गए अपने कैरियर को वह सफलता की ऊँचाईयों तक पहुँचाती है। राजेंद्र गोयनका के बच्चों की शिक्षिका से लेकर अपना अलग व्यवसाय स्थापित करने तक वह रात-दिन मेहनत करती है। मूड़ी स्वभाव की रमा अपने से अठारह वर्ष बड़े मि. राजेंद्र गोयनका से प्रेम करती है। जो विवाहित ही नहीं बल्कि तीन बच्चों के पिता हैं। राजेंद्र गोयनका के यहाँ टिचर से सेक्रेटरी, सेक्रेटरी से व्यापारी सलाहकार बनी रमा गोयनका परिवार के लिए अथक परिश्रम करती है। वह अपने आपको मशीन बना लेती है।

सामाजिक उपेक्षा के बावजूद भी रमा प्यार में सब-कुछ त्यागने को तैयार है। आत्मनिर्भर एवं स्वाभिमानी स्त्री रमा के गोयनका के साथ संबंध को समाज स्वीकार नहीं करता है। क्योंकि उसने सामाजिक व्यवस्था के विपरीत जीवन को चुना है। समाज की दकियानूसी बातों को सुनकर वह अनसुना कर देती है और अपने मुकाम तक पहुँचती है। वह एक सच्चे दोस्त के रूप में राजेंद्र गोयनका का साथ निभाती है। उसकी कर्तव्य भावना देख डॉ. अमरज्योति लिखती है, "अपने-अपने चेहरे में रमा को सहपत्नी का स्थान प्राप्त है। जो विवाह-संस्था को नकारते हुए भी अपना कर्तव्य निभाती है।"[15] रमा का संघर्षमय जीवन कई पड़ावों से होकर गुजरता है।

रमा स्त्री की मानसिक स्वतंत्रता पर बल देती है। "मुक्ति केवल आर्थिक नहीं होती। जरूरत तो है कि औरत अपनी मानसिक जकड़न से निकले।"[16] रमा अपना अलग व्यक्तित्व और अस्तित्व बनाती है। अपने फ्लैट में समाज द्वारा सतायी गयी समस्याग्रस्त स्त्रियों को सहारा देती है। वह स्वावलंबी औरत बनकर स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है। रमा अपने अधिकारों के बजाय कर्तव्यों के प्रति ज्यादा सतर्क है। वह प्रेम को शाश्वत नहीं मानती। वह कहती है, "हर प्यार की उम्र हुआ करती है, कभी वह कुछ क्षण तो कभी सप्तर्षि का घेरा बनता है। लेकिन खत्म जरूर होता है। प्यार शाश्वत नहीं। कम से कम जैविक धर्म पर आधारित स्त्री-पुरूष का प्यार तो नहीं।"[17] स्त्री को लेकर रमा के मन में उद्वेलन रहता है। वह स्त्री-पुरूष को तराजू के दो पलड़े मानती है, मगर उसे एक झुका हुआ लगता। रमा का मन पूछता कि क्या पुरूष के बिना स्त्री अधूरी है? उसका उत्तर होता है हाँ। जैसे राजेंद्र के बिना मैं लेकिन

तभी अंदर से आवाज आती ''अपने आप में मैं एक इकाई हूँ। पूर्ण हूँ। यानी मुझे अपने जीवन में अब पुरूष की कोई ऐसी भूमिका नजर नहीं आती। जहाँ तक संवेदना और लगाव का सवाल है, उसे और भी कई रूपो में पाया जा सकता है।"[18] राजेंद्र के प्यार में उलझा रमा का मन अपने आप में सार्थकता ढूँढता है। वह अपने संबंध को प्यार से निकालकर दोस्ती तक सीमित करना चाहती है। इस प्रकार रमा पाठक को प्रेरणा देती है। मानवीय संवेदनाओं से भरपूर रमा स्त्री को अपना वजूद टटोलने के लिए विवश करती है।

'पीली आंधी' की **सोमा** रमा की तरह अंग्रेजी पढ़ी, खूबसूरत और प्रखर दिमागवाली हैं। वह परिस्थितियों के अनुरूप अपने आपको ढालने का प्रयास करती है। उसे अपना भविष्य अंधकारमय लगने लगता है। रूंगटा हाऊस के कायदे कानून देख वह विद्रोह करती है, "विद्रोह करना होगा। पहले दिन से, आज से, अभी से इसी क्षण से। बुढियां जो बोलेगी, उसका उल्टा करूंगी। देखूं, वह मेरा क्या बिगाड लेती है?"[19] इसिलिए वह करवा चौथ के दिन चाय पीकर ताई सास का विरोध करती है। वह आगे पढ़ने की इच्छा व्यक्त करती है। प्रोफेसर सुजीत सेन से सोमा अपनी बौद्धिक प्यास और तन-मन की प्यास बुझाती है। वह विवाह संस्था से अधिक प्यार को महत्व देती है। उसके संबंध में हरिकृष्ण राय लिखते है, "सोमा, नपुसंक पति की भार्या होने पर भी पारिवारिक प्रतिष्ठा पर बलि होने को अभिशप्त है। पर वह विद्रोह करती है और परंपरागत नारी संहिता के सारे नियमों को अपने पैंरोतले रौंदती हुई घर के बाहर निकल जाती है।"[20] वह परंपरागत संस्कारों के बंधन को तोड़कर स्वतंत्र होकर आत्मनिर्भर जीवन व्यतीत करती है। दृढ निश्चयी और स्वाभिमानी सोमा कॉलेज में अध्यापन का कार्य कर अपने पैरों पर खड़ी होती है। अरविंद जैन उसके प्रयास के बारे में कहते है, "पारिवारिक मान-मर्यादा, नाम और नैतिकता की देहरी लाँघती नायिका (सोमा) सुरक्षित अर्थव्यवस्था के जाल-जंजाल ही नहीं तोड़ती-छोड़ती बल्कि सामाजिक संस्कारों की सीमाएँ भी ध्वस्त करती नजर आती है।"[21]

वह तो पूरी मानवीय गरिमा के साथ जीती है। उसके आधुनिक रूप को देख उषाकिर्ति राणावत लिखती है, "लेखिका ने सोमा के रूप में आधुनिक स्त्री का जो

उदाहरण दिया है, वह असाधारण और नया है।"[22] इस प्रकार सोमा स्वाभिमानी और प्रभावशाली नारी पात्र है।

परिस्थिति का मुकाबला कर अपने अस्तित्व को साबित करनेवाली 'स्त्री-पक्ष' की **वृंदा** का बचपन कड़े अनुशासन में बीतता है। संक्रमण के दौर से गुजरती किशोरी को सबसे अधिक प्यार और स्नेह की जरूरत होती है। पर परिवार द्वारा उसे दुनिया की नजरों से दूर रखने का प्रयास किया जाता है। वृंदा सोचती - "लोग कुत्ते-बिल्ली की पीठ पर हाथ फेरते हैं --- फिर छोटी बच्ची के सर पर, पीठ पर क्यों नहीं हाथ फेंरते? हर व्यक्ति स्पर्श सुख चाहता है। इस सुख से जब वह वंचित रहता है, तभी कुंठाग्रस्त होता है।"[23]

पुरूष के जीवन के बारे में वृंदा सोचती है कि पुरूष सक्षम है। रोज अखबारों, किताबों, देवताओं सबमें पुरूष को ही वह सक्षम देखती। उसका मासूम मन सोचता है, "अखबार में कितने पुरूषों की तस्वीरें छपती--- कितने नेता, इस देश के कर्णधार अवतार पुरूष, परमहंस देव, विवेकानंद --- भगवान भी तो पुरूष है - राम कृष्ण, शंकर। पहले हम कहते हैं -हे भगवान ! और भगवान शब्द पुरूष सत्ता का प्रतीक है। देवियां? नहीं ये देवियां तो मानो किसी पुरानी सभ्यता की अवशेष चिह्न हो, जिन्हें अब देवताओं की कृपा पर निर्भर करना पड़ता है। मां दुर्गा का स्वरूप निर्धारण देवताओं ने किया, विष्णु ने उन्हें चक्र दिया, शंकर ने त्रिशुल और ब्रम्हा ने ----? वे शेर की सवारी पर निकली थीं, शेरनी पर क्यों नहीं निकली ?"[24]

बचपन से ही लड़की को कमजोर बनाने के प्रयास शुरू हो जाते हैं। वृंदा को पुरूष जाति से छिपाकर रखने की प्रक्रिया यही बताती है कि छोटी लड़की के मन में पुरूष के अस्तित्व का भय भर दिया जाता है। साथ ही यह भी कहा जाता है कि आदमी के बिना वह इस पुरूषों की दुनिया में सुरक्षित नहीं है। वह लड़की औरत बन जाती है, मगर उसके मन से भय और सुरक्षा नामक शब्द निकल ही नहीं पाते। वृंदा इन्हीं शब्दों के जाल में फंसकर वर्षो तक पुरूष सत्ता से नहीं निकल पाती, जब उसे इस पुरूष सत्ता की हकीकत समझ में आती है, तब काफी समय गुजर चुका था।

स्कूली शिक्षा के बाद उसे कॉलेज भी भेजा जाता है। वृंदा पढ़ने में हमेशा अव्वल रहती है। उसे पढ़ने का बड़ा शौक है। वह स्वतंत्र विचारों की लड़की है, मगर वह स्वतंत्रता को देह से परे मन व मस्तिष्क की स्वतंत्रता मानती है। वह चाहती है कि जितनी छूट लड़के को मिलती है, उतनी लड़की को भी चाहिए। वृंदा कॉलेज में पुरूष दोस्तों के साथ रहते हुए भी अपनी सीमाओं को बनाए रखती है। पारिवारिक संस्कारों का प्रभाव वृंदा पर कायम रहता है।

कॉलेज में अनीश से उसकी दोस्ती होती है जिसे वृंदा के माता-पिता स्वीकार करते है। अनीश नए साल के उपलक्ष्य में रखी पार्टी में वृंदा की उपेक्षा करता है। जिसे वह सहन नहीं कर पाती। वह बीयर का सेवन करती है। जिससे वह अपना संतुलन खोने लगती है। उसपर बदनामी का ठप्पा लग जाता है। वृंदा को सुरक्षा की जरूरत महसूस होती है। उसे एक ऐसा पुरूष, पति के रूप में चाहिए जो इस दुनिया में उसे सुरक्षा दे सके, चारों तरफ से घूर रही भेड़ियों की-सी नजरों से उसे बचा सके। उसे लगता है कि स्त्री की कमजोरी अपनी देह को लेकर है।

वृंदा का सुमित से विवाह हो जाता है। कुछ दिन तक सबकुछ बड़ा अच्छा लगता है। दोनों एक छोटा-सा फ्लॅट लेकर सुखी गृहस्थी जीने लगते है। वह सुगृहिणी तो है ही साथ, ही एक अच्छी माँ भी है। अपने बच्चों की परवरिश में वह थोड़ी-सी भी लापरवाही नहीं करती। घर की चार दीवारों के भीतर का खालीपन वृंदा को झकझोरता है। वह कुछ काम करना चाहती है। चाहे छोटी-मोटी नौकरी ही कर ले। सुमित उसे नौकरी नहीं करने देता। सुमित का देविका से संबंध होने के कारण उनकी गृहस्थी में दरार पड़ती है।

सुमित जब तलाक का प्रस्ताव रखता है तब वृंदा अपने अधिकारों को सुरक्षित करती है और फिर तलाक के कागजों पर हस्ताक्षर कर देती है। वह बड़ी मजबूती से अपनी जमीन पर खड़ी रहती है और अपने जीवन की सार्थकता के लिए प्रयत्नशील है। वृंदा एक बुटिक खोल देती है और आत्मनिर्भर जीवन जीने लगती है। वृंदा के जीवन में आर्जव प्यार की बहार लेकर आता है। वृंदा अपने कारोबार में व्यस्त है और आर्जव पर उसे अपना मलिकाना हक महसूस होता है। आर्जव को मुंबई में एक बड़े

काम का ऑफर मिलता है लेकिन वृंदा उसके साथ चलने से इन्कार कर देती है। अपनी आत्मनिर्भरता से वह परिपक्व बनती है। वह फिर से किसी पुरूष के सहारे के चक्कर में फँसना नहीं चाहती। सुमित जब वृंदा के जीवन से जाता है तो वह बहुत रोती - गिड़गिड़ाती हुई उसके चरणों में गिरती है, मगर जब आर्जव जाता है तब वह संयत मन से कहती है, 'मैं यहीं रहूंगी।'

अपने काम में रत रहते हुए वृंदा को महसूस होता है कि वास्तव में स्वतंत्रता तो उसे अभी मिली है। आज तक तो वह दूसरों की बैसाखियों पर घिसट रही थी। अपनी मेहनत से वह अपना घर बनाती है और स्वाभिमान से जीना सीख जाती है। स्त्री का संघर्ष, उसका आत्मबोध, उसकी पीड़ा, कमजोरी, निर्णयात्मक क्षमता की अभिव्यक्ति वृंदा के माध्यम से व्यक्त हुई है।

प्रभा खेतान के उपन्यासों के उपर्युक्त पात्रों में देशप्रेम, स्वाभिमान, आत्मविश्वास, मेहनत, विद्रोह, सिद्धांतवाद, दृढ़निश्चय, आत्मनिर्भरता, स्वतंत्रताप्रिय, शोषित, प्रभावी, दबंग, गंभीर, मुँहफट, ईमानदार, संघर्षशील एवं सनकी आदि विशेषताएँ दिखाई देती है। उपर्युक्त पात्रों के अतिरिक्त प्रभा खेतान के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति में ढली, नैतिकता को अपनानेवाली नारियाँ भी दिखाई देती है। 'तालाबंदी' की **सुमित्रा** आज्ञाकारिणी बहू, पत्नी, भाभी और ममतामयी माँ आदि भारतीय नारी के आदर्श गुणों से संपन्न है। वह संयमी एवं सुशील है। श्याम बाबू की पत्नी सुमित्रा अपने पति और परिवार का अच्छे से ध्यान रखती है। वह जीवन की हर परिस्थिति से समझौता करती है। मौन उसका आभूषण है। एक साधारण गृहिणी जैसी वह अपने पति के हर कार्य में मौन स्वीकृति देती है। भगवान की कृपा से सुमित्रा के पास सब-कुछ है। वह बड़ी उदार स्वभाव की स्त्री है। उसके मन में कोई शिकायत नहीं।

धन का लालच आदमी को अपने परिवार से दूर ले जाता है। इस बात को सुमित्रा अच्छी तरह जानती है। पति का रात-दिन यूँ दौड़ना, झकझक करना उसे पसंद नहीं। इसलिए वह पति से कहती है- "जी, मेरे को न तो हीरा चाहिए न ही

इम्पोर्टेड सामान। भगवान के लिये आग से मत खेलिये। कहीं आपका ब्लड प्रेशर बढ़ गया, कोई और बात हो गई तो....।"[25]

सुमित्रा पति के मन में बदलाव लाने तथा उन्हें रिलेक्स करने के लिए पति से सेक्स की मांग करती है। उसका पति इस मांग को पूरा नहीं कर पाता। पति के इस ठंडेपन के लिए वह खुद को दोषी मानती है। पति की दिन-रात बढ़ती चिंता, भय और आतंक से सुमित्रा पत्थर-सी बन जाती है। वह पति को सबकुछ छोड़ दिल्ली भाग जाने की सलाह देती है। अपनी बात को प्रभावी ढ़ंग से न कह पाना सुमित्रा की कमजोरी है। रोना और कमजोर मन उसकी चारित्रिक विफलताएँ है।

सुमित्रा की तरह 'पीली आंधी' के चुरू के मनसुखदास की बेटी **पद्मावती** बेहद सुंदर और आकर्षक व्यक्तित्व की धनी है। अनपढ़ अशिक्षित पद्मावती व्यवहार में बड़ी तेज है। शादी के बाद पूरे परिवार की निस्वार्थ भाव से सेवा करना अपना धर्म मानती है। पहली बार ससुराल में सास के बुरे व्यवहार से विचलित न होकर अपने व्यवहार से सबका मन जीत लेती है। अपनी उदारता का परिचय देते हुए सास से कहती है, "नहीं मां जी, मेरे तो छहों टाबर अपने हैं, एक को गोद लेने से वह अपना होगा या नहीं यह तो मालूम नहीं। लेकिन बाकी सारी टाबरी पराई हो जाएगी।"[26]

पद्मावती का भरापूरा फूलों की तरह खिला हुआ जीवन पति माधो के जाने पर बिल्कुल खाली हो जाता है। उसकी पहचान केवल सफेद साड़ी रह जाती है। विधवा का जीवन जीनेवाली पद्मावती की भावनाओं को कोई समझ नहीं पाता। उसके विधवा रूप के संबंध में हरिकृष्ण राय लिखते है, "सतृष्ण कामना से तड़प उठने वाली पद्मावती अनमेल विवाह और फिर वैधव्य से अभिशिप्त वेदी पर उस पशु की तरह छटपटाती है, जिसका सिर पूरी तरह से धड़ से जुदा न हुआ हो। हजारों वर्षों से पदच्युत, पददलित, अत्याचार पीड़ित स्त्रियों की यही विडम्बना है।"[27]

कमजोर, भावुक और संवेदनशील मन की पद्मावती घर की इज्जत बनाए रखने के लिए प्रयासरत रहती है। अपनी व्यवहार कुशलता से अपने देवर के बेटों पर आँच नहीं आने देती। मुसीबतों के सामने मजबूती से डटकर खड़ी रहती है। लेकिन बच्चों के व्यवहार से उसे एहसास होता है कि पराया कभी अपना नहीं होता। धन,

संपदा, ऐशो आराम से जीवन जीनेवाली ताई जी कहती है, "क्या पड़ा है संसार में? दुख ही दुख है।"[28]

अनुशासनप्रिय पद्मावती घर के सदस्यों से हमेशा कुछ निश्चित नियमों का पालन करवाती है। उसकी एक विशेषता यह थी कि वह कोई काम किसी से पूछकर नहीं करती। वह अपने परिवार को एक सूत्र में बांधे रखना चाहती है। वह स्वयं किसी कर्मकांड में विश्वास नहीं करती। परंपराओं को जिंदा रखने के लिए वह गौतम की शादी में सारी रस्मे करवाती है।

पद्मावती समय को विशेष महत्व देती है। बेमतलब बोलना या कुछ करना उसे पसंद नहीं। सोमा के दुख और मातृत्व की चाह को वह जानती है। इसलिए उसका प्रो. सेन के पास जाना उसे अखरता नहीं। वह निमलीबाई से कहती, "निमली यह छोटकी की गलती नहीं। यह तो हम लोगों की गलती थी। जब अपना सिक्का खोटा था, तब पराई बेटी पर हम लोगों ने क्यों लांछन लगाया।"[29] यहाँ पद्मावती स्त्री द्वारा मातृत्व पाने हेतु पति के नपुंसक होने पर किसी दूसरे के भृण को कोख में पालना सही ठहराती है। जिसके लिए वह पौराणिक कथाओं के प्रमाण देती है। पद्मावती ऊपर से कठोर लगती है लेकिन उसके हृदय के किसी कोने में ममता का अथांग सागर लहरें मारता है। वह सुराणाजी से बेपनाह प्यार करती है लेकिन अपने कर्तव्य को निभाने के लिए प्रेम का त्याग करती है। पद्मावती दूसरों के कल्याण हेतु अपना सबकुछ दाँव पर लगाती है। वह अपने घर परिवार के लिए अपनी वैयक्तिक भावनाओं की बलि चढ़ाती है।

पति को भगवान मानकर पूजनेवाली और पति के सामने हमेशा झुकी रहनेवाली 'अपने-अपने चेहरे' की **सरला** मि. गोयनका की पत्नी है। अनपढ़ गँवार सरला की चौदह वर्ष की अवस्था में ही शादी होती है। अपनी फूहड़ता के कारण शादी के बाद सुहागरात पर पति द्वारा वह नकार दी जाती है। इस बेमेल विवाह के कारण वह अपने जीवन में दूसरी औरत की पीड़ा को झेलती है। रूढ़िवादी विचारों की पोषक सरला पति की हर हरकत बर्दाश्त करने में ही अपनी भलाई मानती है और

चुटकी भर सिंदूर से आत्मबल लेकर पति से जुड़ी रहती है। वह सबके आगे रमा को लेकर हौवा खड़ा करती है जिससे उसे सबकी सहानुभूति मिलती है।

अनपढ़ गँवार सरला अपनी बहुओं को खूब पढ़ाना चाहती है। वह हमेशा अपने बहू-बेटों को वश में रखना चाहती है। उसे देवी बनना और देवी कहलाना ज्यादा पसंद है। वह बच्चों से हमेशा कहती है, "हाँ बेटे! बस तुम्हीं लोगों के लिए तो मैं जिंदा हूँ।"[30]

सरला हमेशा मध्यममार्ग पर चलने की कोशिश करती है। एक ओर वह रमा को पसंद भी नहीं करती तो दूसरी ओर उसकी वजह से बरसते हुए धन और बदलते हुए जीवन स्तर की भीनी-भीनी खुशबू उसे बहुत अच्छी लगती है। वह जानती है कि समाज ऐसे संबंधों को स्वीकार नहीं करता। वह पति से कहती है, "हिम्मत तो आपकी नहीं है कि सीधे समाज का सामना करें। कमजोर तो आप है, मेरी गलती क्यों निकाल रहे है? मैं पूछती हूँ कि आप उससे शादी क्यों नहीं कर लेते? पर अपने में हिम्मत होनी चाहिए। हाँ, मैं तलाक -वलाक नहीं देने की। राजा पांडु की दो पत्नियाँ कुंती और माद्री कैसे मिल कर रहती थीं। क्या पता, सहन किसने किया?" [31]

सरला पति राजेंद्र गोयनका के सामने हमेशा झुक जाती है क्योंकि वह जानती है, पति को वश में रखना है तो झुककर चलो। अपनी बेटी **रीतू** को लेकर सरला बड़ा ही अजीब व्यवहार करती है। जब राजेंद्र सरला को पति द्वारा रीतू को मारने वाली घटना बताता है तब सरला कहती है कि क्या हो गया यदि पति ने हाथ उठा भी दिया तो। रीतू को घर तो नहीं छोड़ना चाहिए था। पति के बिना कैसा जीवन? वह चाहती है कि अब भी रीतू वापस चली जाए और पति से माफी माँग ले। भारतीय संस्कारों से युक्त सरला स्त्री को पुरूष की गुलाम समझती है। वह खुद दुखी जीवन जी रही है और बेटी रीतू को भी सहन करने की सलाह देती है।

सरला रीतू को भी अपने जैसा बनाना चाहती है। रीतू में की तरह विद्रोह है, पर वह दृढ़ निश्चयी नहीं है। पति कुणाल के पूर्ण समर्पण के आगे वह भी समर्पित है और उसका दाम्पत्य जीवन प्यार से भरा है। जब पति के कदम भटकने लगते है तो

वह अपना विरोध दर्ज कराती है परंतु पति को वापस भी नहीं ला पाती। रीतू भटकते हुए पुरूष को गृहस्थी तोड़ने का दोषी नहीं मानती।

रीतू अपने वैवाहिक जीवन में मिसफीट हो जाती है। दो वर्ष तक इस तनावपूर्ण जीवन को सहने के बाद कुणाल के कहने पर अपना घर छोड़ देती है, रीतू रमा की बातों से प्रभावित होती है और उसके विचारों के अनुसार चलना भी चाहती है। वह गोयनका हाऊस में स्थायी मेहमान तो बनती है, परंतु स्थायी सदस्य नहीं बन पाती। पिता के घर रीतू को स्वागत की जगह सवालिया नजरें घेर लेती है। भाई-भाभियों की उपेक्षा उसे सताने लगती है। वह अपनी माँ जैसा जीवन नहीं चाहती। वह माँ के कदमों पर नहीं चलना चाहती। उसे माँ की सहन करने वाली भाषा पसंद नहीं, भीतर ही भीतर जलना और कुढ़ना तथा ऊपर से हँसने का नाटक करना उसे मंजूर नहीं है। रीतू ना तो कुणाल को तलाक देना चाहती है और ना ही दूसरी शादी करना चाहती है। क्योंकि वह अच्छी तरह जानती है, दस साल बाद कोई आदमी नौकरी भी छोड़ता है तो हर्जाना माँगता है। कानून और सरकार उसकी सहायता करता है, लेकिन औरत को क्या मिलता है?

रीतू समाज व्यवस्था को स्वीकार कर जिस व्यक्ति का हाथ पकड़कर चल रही थी, वह हाथ आज उसे छोड़कर दूसरी औरत के हाथों को अपना लेता है। वह रमा की आहुति को याद करती है, लेकिन उससे कभी प्यार नहीं कर पाती। उसका इकलौता बेटा टिंकू भी उससे अलग होता है। जिस बेटे को लेकर उसने कई सपने देखे थे, वह सब उस औरत के कारण काँच की किरचों से बिखर गये थे। उसे अपना जीवन अधर में लटका हुआ महसूस होता है।

वह सोचती है कि वह किसी स्कूल में नौकरी कर लेगी। ऐसे ही टूटते-जुड़ते एक साल निकल जाता है। रमा रीतू को समझाती है, "रीतू, जीवन सार्थक बन सके इसका प्रयास करो। विवाह पति बच्चे से परे भी औरत है, उसका अस्तित्व है। उसका सामाजिक अवदान हो सकता है, इस पर सोचो। पति सर्वस्व नहीं, अपने स्व को पहचानो।"[32]

अपनी माँ को खुश करने के लिए रीतू, आखिरकार माँ को अच्छी लगने वाली बातें स्वीकार करती है। रीतू वर्तमान पीढ़ी की स्त्री दशा पर पूरे उपन्यास में सवाल उठाती है। रीतू का चरित्र जहाँ एक ओर स्त्री के आत्मविश्वास को बचाए रखता है वहीं दूसरी ओर एक कमजोर स्त्री की छवि को भी गढ़ता है।

रीतू की तरह दब्बू स्वभाव की पात्र 'एड्स' की **प्रभा** है। जो लाचार एवं ड़रपोक है। जर्मनी आकर प्रभा व्यापार के झंझटों में उलझी रहती है और फिर पेरिस चली आती है। वह छोटे से सुख से अभिभूत हो जाती है तो दु:ख के सामने कमजोर पड़ जाती है। हालाँकि वह जानती है कि निड़रता के बिना व्यापार का महल खड़ा नहीं होता परंतु चैक के गायब हो जाने पर वह लाचार और असहाय हो जाती है। प्रभा भारत जैसे गरीब देश से आयी है। इसलिए वह अपना ज्यादा से ज्यादा समय काम में लगाती है। उसे बेवजह घूमना-फिरना अच्छा नहीं लगता। वह कहती है- "कुक्कू मैं अपने देश में अमीर हूं पर यहां बहुत गरीब। कल से आजतक ढ़ाई सौ डालर खर्च हो गये हैं.... जिसमें अभी होटल का बिल नहीं चुकाया है।"[33]

वह दुनिया की स्त्री की बेबसी जानती है। उसे पता है कि आज भी स्त्री की आँखें किसी का सहारा खोजती है। दुनिया के हर कोने में स्त्री की यही असहाय साँसे सुनाई देती है- "दुनिया में कहीं भी जाओ, हर जगह औरत का वहीं रोना ! अकेली औरत की सूनी आंखें कह रही होती हैं कि मुझे कोई प्यार नहीं करता।"[34] प्रभा जीवन को अपने तरीके से जीने की इच्छा रखती है।

इस प्रकार प्रभा खेतान के उपर्युक्त पात्रों में धर्मभीरूता, पतिपरायणता, परंपराप्रियता, सुशीलता, ममता, भावुकता, संवेदनशीलता, कर्तव्यपरायणता, धार्मिकता एवं आदर्श आदि विशेषताएँ दिखाई देती है।

3.1.2. गौण नारी पात्र-

प्रभा के उपन्यासों के गौण नारी पात्र भी जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत करते हुए वर्तमान को पूर्ण तन्मयता के साथ जीने का संदेश देते है।

स्त्री के स्वाभिमान को जिंदा रखनेवाली 'आओ पेपे, घर चले' की **मरील** अपने सपनों को सच करने के लिए काफी मेहनत करती है। मरील को प्यार की जरूरत

कम और पैसे की भूख ज्यादा है। प्रतिष्ठित समाज में अपना स्थान बनाने की इच्छा लिए वह अपने स्त्री मन को भूल जाती है। वह बेटियों से प्यार तो करती है मगर जहाँ बाप का नाम आता है, वहाँ ईर्ष्या से जलने लगती है। परिणामस्वरूप उसके मुँह से हमेशा फूलों की तरह गालियाँ बरसती है। कई बार उसका मन इतना क्रूर हो जाता है कि अपनी बेटी पर हाथ उठाती है। वह अपनी बेटी लारा के चाल-चलन से भी परेशान है और उसका मन इस दुश्चिंता से घिरा रहता है कि देश की पूरी युवा पीढ़ी गांजे में डूब जाएगी। स्त्री की पीड़ा को व्यक्त करते हुए मरील कहती है- "जिन्दगी जब तुम्हें ठगेगी और बार-बार ठगेगी, तब तुम क्या करोगी?....अभी बहुत छोटी हो, औरत के सीने में दर्द का कौनसा लावा खौलता रहता है, यह आज तुम क्या जानो !"[35]

यह दर्द का लावा ही स्त्री को साहसी बनाता है। स्त्री न सिर्फ अपनी सुरक्षा चाहती है, वह तो स्त्री जाति की आनेवाली पीढ़ी को भी सावधान करना चाहती है। मरील प्रभा को सतर्क करती हुई कहती है- "कोई भी दर्द इतना बड़ा नहीं होता कि औरत अपने आसुओं का खजाना खाली कर दे। भविष्य में रो सको, इसलिये आंसुओं को दबाए रखना।"[36] वह अपने बुटीक में प्रभा को भागीदार बनाना चाहती है। इस तरह मरील ऊँची महत्वाकांक्षा रखनेवाली और स्त्री के दर्द को वाणी देनेवाली हँसोड एवं क्रियाशील नारी है। वह कठिन से कठिन संकट का सामना करके श्रम को महत्व देकर अपनी पहचान बनाती है। वह जीना चाहती है लेकिन अपने आपको बाँधकर नहीं रखना चाहती।

इसी उपन्यास में **'कैथी'** मरील के समान बेहद जिंदादिल, स्वतंत्र, आत्मविश्वासी एवं खुशमिजाजी नारी है। न्यूयार्क में रहनेवाली, हँसमुख, सुंदर, आकर्षक, बंधनों को अस्वीकार करनेवाली, खुशियों के आशियाने में महकनेवाली कैथी डॉ.ब्रेंडले मूर की पत्नी है। लेकिन कैथी के अंदर भी अन्य नारी पात्रों की तरह तूफान उठते और शांत होते रहते हैं। मूड़ी किस्म की कैथी परपीड़न में सुख मानती है। इसलिए वह अपने पति को निरंतर दु:ख पहुँचाना चाहती है। उसकी निगाह में पति अहंकारी सूअर से ज्यादा कुछ नहीं है। वह स्वयं की पहचान बनाने के लिए व्यवसाय

करना चाहती है, परंतु पति का इनकार उसके रास्ते में बाधा बनता है। वह टूटी हुई सड़ी-गली व्यवस्था की उपज नहीं बनना चाहती, वह कल की औरत का भविष्य बनने के लिए कमजोर न रहकर मजबूत बनना चाहती है। इसलिए पति का पैसा खूब खर्च करती है। उसे लगता है उसकी हरकतों से तंग आकर पति उसे काम करने हेतु स्वतंत्र कर देगा। काम को महत्व देनेवाली कैथी की निगाह में प्यार एक आदत है और हम सब आदतों के गुलाम है।

व्यवहारिक बनने में विश्वास रखनेवाली कैथी औरत के अस्तित्व से अच्छी तरह परिचित है। वह नारी के भावों के प्रति अधिक संवेदनशील है। वह अपनी इच्छाओं के साथ दूसरों की इच्छाओं को भी पूरा करने का प्रयास करती है, तभी तो प्रभा की हारलेम देखने की इच्छा को पूरा करने के लिए तुरंत तैयार हो जाती है।

मनुष्य को तोड़ देनेवाले हादसों से उबरने की क्षमता तो कैथी में भरपूर है साथ ही जीवन में कोई हादसा ही न हो, इसके लिए वह पहले से ही सतर्क हो जाती है। बहन एलिजा के बारे में कैथी सोचती है कि यदि उसकी बहन एलिजा पहले ही सही कदम उठा लेती तो वह आज इस स्थिति में नहीं होती। जीवन की विपरीत परिस्थितियों एवं दुर्घटनाओं से उबारने के लिए जीवट की आवश्यकता होती है और ऐसा ही जीवट चरित्र कैथरिन के रूप में उभरकर आया है।

'आओ पेपे, घर चलें' की **आइलिन** सनकी, ममतामयी, सजग, संवेदनशील, दूसरों की बोलती बंद करनेवाली, दृढ़ चरित्रवाली पात्र है। वह अमरिका को रहने लायक नहीं मानती। फिर भी अमरिका में रहकर डॉ.डी. के. क्लीनिक में काम करती है। ल्युकोमिया से ग्रसित होते हुए भी वह जिंदादिली से जीती है। आइलिन का पहला पति 'जान' मर चुका है। वह इस पति और पाँच प्रेमियों को अक्सर याद करती है। वह अपने खाली जीवन को पेपे (कुत्ते) के सहारे भरने का प्रयास करती है। अपने जीवन की सच्चाई को जानते हुए भी वह अपने मन को भुलावे में रखती है। वह अपनी दमित इच्छाओं को पूरा करने का स्वांग रचाती है। कभी बाल रंगाती, कभी बुढ़ाए शरीर की झुर्रियाँ छिपाती तो कभी स्वीमिंग पूल में नंगी तैरती है। जर-जर होते जीवन की छाया उसे सोने नहीं देती और तन्हाई से डरती हुई वह अपने बिस्तर से

दूर रहती है। मन का द्वंद्व उसे रातों को भी चैन नहीं लेने देता और शराब के नशे में कुर्सी पर रात बिताने को मजबूर कर देता है। अपना कहने को उसका कोई नहीं है। वह तो गैरों को ही अपनाए हुए है। वह प्यार को बहते पानी के समान स्वच्छ एवं पवित्र मानती है। किसी एक खूंटे से बंधकर जीने के बजाय प्यार में बहने में विश्वास करती है। स्मृतियों को नए चेहरों में जीवित रखती है। एक नारी होने के नाते वह मिसेज डी के दुख से दु:खी होती है।

आइलिन कभी थकती नहीं। उसमें गजब का उत्साह दिखाई देता है। वह अंत तक संघर्षरत रहती है। हारना तो मानो उसने सीखा ही नहीं। वह इंसान, जानवर और अपने देश से प्रेम करना सिखाती है। स्वाभिमानी आइलिन स्त्री जाति के जख्मों को बड़ी गहराई से महसूस करती है। वह प्रभा को औरत की दयनीय लाचार स्थिति से परिचित कराते हुए कहती है - "दुनिया में ऐसा कोई कोना बताओ, जहां औरत के आंसू नहीं गिरे?" [37] औरत के औरतपन के बारे में उसके विचार है - "औरत कहां नहीं रोती और कब नहीं रोती ! वह जितना भी रोती है, उतनी ही औरत होती जाती है।"[38]

आइलिन के संवेदनशील और दृढ़ चरित्र को लेकर अम्बिका सिंह वर्मा लिखते हैं, 'आओ पेपे, घर चले' की केंद्रीय पात्र आइलिन किसी हद तक सनकी और विचित्र किंतु दृढ़ चरित्र है। उसकी मन:स्थिति पुरुष समाज के प्रति उसके विचारों और दृष्टिकोण का विश्लेषण किसी हद तक आर्थिक समृद्धि से लकदक पश्चिम के विषमताग्रस्त समाज, उसके सशील मूल्यों, घोर यांत्रिकता और अमानवीयकरण के विरूद्ध एक तीखी टिप्पणी है।''[39]

वह अपनी जिंदगी की 31 दिसंबर की आखरी रात प्रभा के साथ हँसते, गाते और नाचते हुए बिताती है तथा शराब के अधिक सेवन से दूसरे दिन मर जाती है। वह इन्सान की इन्सानियत और उसके अंदर बैठे हैवानियत को अच्छी तरह जानती है।

नारी की अस्मिता को मजबूती से पेश करनेवाली देशप्रेमी, गंभीर एवं मितभाषी 'आओ पेपे, घर चलें' की **हेल्गा** मूल रूप से इजराइल की यहूदी नारी है। पति के प्रेम

को वह दया समझती है और उसे ठुकराने का माद्दा भी रखती है। हेल्गा कम बोलने वाली और गंभीर स्वभाव वाली नारी पात्र है। वह एक 'ड्राइव इन रेस्टोरंट' की मालकिन है। वह एक देश भक्त नारी है। वह प्रेम को ठुकराकर अपने देश जाना चाहती है। वह नस्लवाद की शिकार है पर अपनी नस्ल के लिए कुछ करना चाहती है। हेल्गा उस क्षण को हमेशा याद रखती है जिस क्षण ने उसके जीवन की तमाम खुशियाँ छीन ली। वह अपनी रात-दिन की मेहनत से बचाए पैसों को अपने देश भेजती है, ताकि उसकी जाति उनका उपयोग कर सके। अपने देश के प्रति वह जितनी संवेदनशील है, उतनी अपने बच्चे और पति के प्रति नहीं। वह अनेक उलझनों के बीच में संतुलन बनाए रखती है। वह अपने विचार अपने बच्चों पर नहीं थोपती। हेल्गा अपनी व्यथा इन शब्दों में व्यक्त करती है- "सब एक-एक कर घर छोड़कर चले जाएंगे और मैं खाली घोसलें में डाक्टर बेरी की हर शाम की प्रतीक्षा करती रह जाऊं? भूल जाऊं कि मेरी नस्ल का एक भी राष्ट्र नहीं है इस धरती पर?"[40]

स्वतंत्र एवं सशक्त विचारों वाली हेल्गा वास्तव में स्त्री को पुरुष के बराबर की जमीन पर खड़ा करती है और किसी भी दृष्टि में अपने-आप को कमजोर महसूस नहीं करती। वह कर्मठ व्यक्तित्व वाली नारी है जो अपने अनुभव और विचारों में किसी की साझीदारी पसंद नहीं करती। हेल्गा नारी की अस्मिता को मजबूती से पेश करती है। उसमें नारी की समूची पीड़ा के साथ राष्ट्र प्रेम भी व्यक्त हुआ है।

विद्रोही, निर्भयी, संघर्षमयी, स्वाभिमानी 'छिन्नमस्ता' की **नीना** तिलोत्तमा और मिस्टर अग्रवाल की नाजायज संतान है। उसमें गजब का खुलापन है। लॉरेटो में पढ़कर ग्रैड होटल में यह इंटीरियर पर्सनल मॅनेजमेंट की पोस्ट पर काम करती है। वह जो करने की ठान लेती है, वही करके दम लेती है। शादी करने से पहले वह अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। नाजायज होने का दर्द उसे हमेशा सताता है।

नीना भ्रम की दुनिया में नहीं जीती। वह जीवन के यथार्थ को खोजती है। उसे अपने पिता की कायरता से नफरत है। वह प्रिया से कहती है- "ऐसे बुजदिल इंसान से मुझे सख्त नफरत है।"[41] माँ की पिता के प्रति अंधभक्ति उसे पसंद नहीं है, साथ ही नरेंद्र को वह नफरत से 'मिस्टर कोबरा' पुकारती है। बड़ी माँ को देवी जी कहती

है। वह लड़कों को बंदर मानती है। पिता के नाम के आगे लेट मिस्टर अग्रवाल लिखती है और किसी के सामने उनका जिक्र नहीं करती।

इसी उपन्यास की प्रिया की बहन **सरोज** जिस चीज को पाने की इच्छा करती वह पाकर रहती है।वह घर में सबकी स्नेह की पात्र भी है। वह डॉक्टरी पढ़कर बहुत सारा पैसा कमाना चाहती है। वह पढ़ने हेतु लंदन जाती है। वहाँ खुद की कमाई से अपनी पढ़ाई पूरी करती है। इतना ही नहीं प्रिया को भी पैसों के लिए पूछती है। यह उच्च शिक्षित, स्वावलंबी और विदेश गमन करनेवाली स्वच्छंद नारी पात्र है।

सरोज की तरह स्वच्छंदी 'स्त्री-पक्ष' उपन्यास की **पिंकी** वृंदा की दोस्त और कामकाजी नारी है, उसमें गजब का आत्मविश्वास है। व्यावसायिक जगत में वह स्थायी नौकरी पर कार्यरत है। पराए पुरूषों के बारे में वह अधिकार से बातें करती है। परिवार से ज्यादा वह अपने ऑफिस के बॉस के बारे में बातें करती है। बॉस के साथ बाहर चाय पीने या खाना खाने जाना इसे वह बुरा नहीं मानती वह वृंदा से कहती है, "अरे वाह! ऐसे क्यों मना कर दूं ----बड़ी मुश्किल से ये दिन देखने को मिले जरा मजा लेने दे।"[42] उसमें साहस, उर्जा, लचीलापन और आत्मविश्वास यह गुण दिखाई देते है।

इसी उपन्यास की **देविका** में भी पिंकी के समान विचार पाए जाते हैं। वह वृंदा की पड़ोसन और दो बच्चों की माँ है। वह बच्चों और पति के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाती है। देविका खुले विचारों की नारी है। वह किसी अध्यात्म गुरू से गुरूनाम लेती है। वह अध्यात्म की बातें करती है। देविका पार्टियों में सुमित के संपर्क में आती है और दोनों में प्यार हो जाता है। देविका अपनी घटिया योजना से वृंदा को चुप करा देती है, पर अंत में सुमित से अलग हो जाती है।

आधुनिक विचारोंवाली 'पीली आंधी ' की **चित्रा** प्रो.सुजित सेन की पहली पत्नी है। नारी ही नारी का आदर कर सकती है, इसे वह अच्छी तरह जानती है। इसलिए वह अपनी सौतन बन आयी सोमा को अपने घर में बड़े आदर से रखती है। एक बहन, दोस्त एवं माँ की तरह उसका ख्याल रखती है। पति की सभी हरकतों पर पर्दा डालती है। सोमा उसके शांत रूप को देखकर अपने आपको अपराधी महसूस करती

है, परंतु चित्रा सोमा से कहती है, "चुप! अपराधबोध से ग्रसित होकर बच्चे को मत बड़ा करना। जो कुछ भी घटा, वह कोई नया तो नहीं। मैं भी तो किसी अन्य पुरूष के प्रेम में पड़ सकती थी। इसमें तुम्हारा क्या दोष है?"[43] चित्रा में सच का सामना करने की शक्ति है। वह प्रेम को शाश्वत नहीं मानती।वह आर्थिक स्वतंत्रता को विशेष महत्व देती है। चित्रा अपने प्रेम संबंध को टूटता देख, बिना किसी शिकवे शिकायत के पति के रास्ते से हटकर नई राह पर चल पड़ती है।

स्वाभिमानी, स्वावलंबी, मेहनती, ईमानदार, साइकियाट्रिस्ट 'छिन्नमस्ता' की **जुड़ी** स्वावलंबन को महत्व देकर पुरूष प्रधान संस्कृति को बेनकाब करती है। 'एड्स' उपन्यास में संस्कारहीन एण्डू की पत्नी **सोफिया** अपने पति के दोस्त से शारीरिक संबंध रखने के कारण एड्सग्रस्त हो जाती है।

'आओ पेपे, घर चलें' की **क्लारा** ऐसी ही पात्र है। अंग्रेज पिता और फ्रेंच माँ की संतान 'क्लारा' रंभा, मेनका या उर्वशी से कम सुंदर नहीं है। पर वह गुस्सैल और संवेदनाहीन नारी है। वह न्यूयॉर्क में पति के साथ रहती थी। वह अपने पति को गुलाम बनाकर रखना चाहती थी। कपड़ों की तरह पुरुषों को बदलने वाली आधुनिक विचारों वाली क्लारा पति से तलाक लेती है और लॉस एंजेल्स में अपने पचास कमरों वाले मकान में रहने चली आती है। अपनी रईसी को वह पार्टी के माध्यम से लोगों के सामने प्रदर्शित करती है। डॉ. डी को अपने प्यार के जाल में फँसा लेती है।

प्रदर्शनप्रिय, सुंदर दिखनेवाली 'अग्निसंभवा' की **कुक्कू** अपने स्टेट्स सिम्बल के लिए हजारों रूपए बरबाद करती है। उसकी उम्र पचास की है फिर भी जीवन को जीने की प्रबल इच्छा उसमें है। पति की चिंताओं से बेखबर होकर वह पति का आर्थिक शोषण करती है। कुक्कू के बारे में उषाकीर्ति राणावत का कहना है- "कुक्कू के हाथों में छेद है। घूमना-फिरना, अच्छा भोजन, शॉपिंग करना उसकी आदत है। पति उसकी फिजुल खर्ची से परेशान है लेकिन वह है कि हजारों डालर खर्च कर पति को दु:ख पहुँचाकर खुश होती है।"[44] वह पति से प्यार की अपेक्षा तो रखती है लेकिन पति से सीधे मुँह बात नहीं करती। अपने जीवन के खालीपन और तकलीफों के लिए वह श्वार्ज को जिम्मेदार मानती है क्योंकि वह औरतों के पीछे पागल-सा

भागता है। तमाम सुख-सुविधा, धन-दौलत होने के बावजूद विदेशी नारी के जीवन में कितना खालीपन है यह कुक्कू को देखकर लगता है।

इसी उपन्यास की शांतिप्रिय, मेहनती हैम्प की पत्नी **पेट्रा** पति के बराबर व्यवसाय में मेहनत करती है। वह अपने जीवन की सार्थकता व्यापार जगत में खोजती है। वह युद्ध नहीं चाहती। वह खाड़ी युद्ध से परेशान है क्योंकि उसका बेटा माइक मिलिट्री में है। उसका पति उसके साथ बच्चे की तरह चिपका रहता है। दोनों के परस्पर विरोधी विचार है। निरंतर व्यापार के चक्कर के कारण पेट्रा को घुटन महसूस होती है।

प्रभा खेतान के उपन्यासों में उपर्युक्त गौण नारी पात्रों में जिंदादिली, सनकी, संवेदनशील, दृढचरित्र, शांतिप्रिय, खुशमिजाज, प्रदर्शनप्रिय, स्वच्छंद, उच्चशिक्षित एवं संस्कारहीन आदि विशेषताएँ दृष्टव्य है।

प्रभा खेतान के उपन्यासों में प्रमुख नारी पात्रों की तरह गौण नारी पात्रों में भारतीय संस्कृति के दर्शन होते हैं। उन पात्रों में पति परायणता, आदर्श एवं दयालु स्वभाव दिखाई देता है। 'आओ पेपे, घर चलें' की **एलिजा** ऐसी ही पात्र है। मझोले कद, नीली पारदर्शी आँखोंवाली अमरीकन औरत एलिजा बोस्टन के रईस बाप की बेटी है, उसे पति के द्वारा खरबों की संपत्ति प्राप्त होती है। यह एक सुंदर एवं बहुत संवेदनशील महिला है। घर में तमाम सुख-सुविधाएँ होने के बाद भी वह त्रिशंकु जीवन जीने के लिए मजबूर है। अपने वैभव को अच्छी तरह पसारकर रईसी के तमाम प्रतीकों को जमा करनेवाली एलिजा क्लारा बाऊन के चंगुल से अपने पति को बचाने में असफल होती है। वह अपने पति को अत्याधिक प्यार करती है और खुद भी पति का प्यार पाना चाहती है। वह पातिव्रत्य को निभानेवाली नारी है। वह प्रेम को आत्मिक अनुभूति मानती है और शरीर को इसमें गौण मानती है। पति की बेवफाई के बाद भी उसे बेइंतहा प्यार करती है। एलिजा एक रहेमदिल और नेक नारी है। वह अपने सौम्य और दयालू प्रवृत्ति के कारण सबको अपनी ओर खींचने में सक्षम है, पर अपने पति को भटकने से नहीं बचा पाती। वह पति की प्रेमिका क्लारा से नफरत नहीं करती, बल्कि उसकी खूबियों को आत्मसात करना चाहती है। वह अपने अंदर वे

कमियाँ खोजती रहती है, जिनके कारण डॉ.डी उससे दूर जा रहे है। एलिजा का मन और मस्तिष्क बिल्कुल विपरीत दिशा में चलते है। दिमाग कहता है कि पति की बेवफाई का बदला लूँ मगर मन प्यार के बंधन में बंधा उसकी साँसों की डोर से जुड़ा रहता है। वह कहती है- "कर तो बहुत कुछ सकती हूं। तलाक, मुआवजा, परस्त्री गमन का चार्ज। मैं.... मैं जार्ज के पूरे कैरियर को धूल में मिला सकती हूं।"[45] पर ऐसा कर नहीं पाती क्योंकि वह जानती है कि, ऐसा करने से उसे डॉ.डी का प्यार नहीं मिल पायेगा। वह कभी एक डाल पर बैठ नहीं सकता।

वह आइलिन से पुत्रीवत प्रेम करती है। आइलिन की मृत्यु के बाद वह टूट जाती है। आइलिन की गोद में सर रखकर अपनी पीड़ा को कम करने वाली एलिजा उसके जाने पर कई डालर खर्च कर साइकियाट्रिस्ट के पास जाकर अपने मन को हल्का करती है। दु:ख में डूबी एलिजा बाहर से बड़ी प्रसन्न लगती है। वह आर्थिक तंगी को सहने वाली प्रभा का हौसला बढ़ाते हुए बीस डालर में बीस मिलियन कमाने का हुनर सिखाती है। प्रभा के साथ वह आत्मीयता से पेश आती है।

उपन्यास के अंत में एलिजा हार मान लेती है। उसके विचलित मन का परिणाम आत्महत्या का असफल प्रयास होता है। वह पति द्वारा पेश किए हुए तलाक के कागजों पर हस्ताक्षर कर देती है। आखिर क्या मजबूरी होती है कि, वह डॉ.डी. से अपना अधिकार नहीं मांगती। उनका वैवाहिक जीवन असफल हो जाता है। एलिजा आर्थिक स्वतंत्रता होने के बावजूद वंचना, पीड़ा को सहकर गीली लकड़ी की तरह जलने के लिए बाधित दिखाई देती है।

एलिजा की तरह घुटन भरा जीवन व्यतीत करनेवाली 'अपने-अपने चेहरे' की **मिसेज अग्रवाल** में संग्रही प्रवृत्ति है लेकिन भावनात्मक लगाव की कमी है।वह पति की रखैल तिलोत्तमा पर दोषारोपण करती है। पति की पूजा तो करती है, लेकिन पति से बदला लेने के लिए बेटे का उपयोग करती है।अपने बेटे का वह अधिक ध्यान रखती है।बहू को भी प्रेम करती है और उसे सजने सँवरने को कहती है।

इसी उपन्यास की **तिलोत्तमा** चालीस वर्षीय मि.अग्रवाल से प्यार करने लगती है। इसलिए उसके पिता उसे घर से निकाल देते हैं। कायर मि.अग्रवाल समाज के

डर से उसे कानूनी तौर पर न अपनाते हुए धर्म को साक्षी मानकर उससे मंदीर में शादी करते हैं। परंपराओं का पालन करते हुए भी वह मि.अग्रवाल की दूसरी पत्नी ही कहलाती है। उसमें पति भक्ति, उदारमन, सहज समर्पण भाव है। डॉ.वैशाली देशपांडे लिखती है- "अपने से 19 वर्ष बड़े विवाहित पुरुष के प्रेम में फँसकर गैर-कानूनी शादी कर लेती है। मात्र धर्म को साक्षी मानकर लिये गये सात फेरों का यह असामाजिक बंधन वह जीवन भर निभाती है।"[46]

परंपराप्रिय, धार्मिक, रूढ़िवादी विचारों की वाहक पति परायण, खानदानी 'छिन्नमस्ता' की **कस्तुरी** का शरीर और मिजाज दोनों ही रईसाना है। कस्तूरी अपने मन के अनुसार चलती है और पूरे घर को नियंत्रित रखती है। वह पुरुष को समाज का मालिक मानते हुए नारी को दासी के पद पर आसीन रखने की पक्षधर है। पति की मृत्यु के बाद वह अंदर तक हिल जाती है, फिर भी कोर्ट-कचहरी न जाने का निर्णय लेती है। वह परिवार की आन-बान और इज्जत बनाए रखने में जी-जान से प्रयत्न करती है।

कस्तूरी अपने घर को एक मंदीर मानती है। लेकिन अपने बच्चों में भेदभाव की रेखा खींच देती है। वह बेटे को श्रवणकुमार और बेटी को माथे का कलंक मानती है। बेटी प्रिया की वह सदा ही उपेक्षा करती है। कस्तूरी अपने-आप को देवी सिद्ध करने का प्रयास करती है। वह धार्मिक कर्मकांडों में जकड़ी नारी का प्रतिनिधित्व करती है। यह खुद नारी होते हुए भी नारी को ही पीछे ढकेलती है।

कस्तुरी के समान 'पीली आंधी ' की **निमलीबाई** अशिक्षित, अनपढ़ एवं भावुक मन की है। पति पन्नालाल सुराणा के रोजी-रोटी के लिए चले जाने के बाद वह अपनी बूढ़ी सास की सेवा करती है। निर्दोष, मुक बधीर-सी वह सरल समर्पण के अलावा कुछ नहीं जानती थी। वह कभी भी अपने पति से किसी चीज की मांग नहीं करती। जैसी परिस्थिति उसे मिलती है, उसी के अनुसार अपने-आप को ढाल लेती है। पति पन्नालाल सुराणा की मृत्यु के बाद वह पद्मावती का साथ देती है। धार्मिक, सरल हृदय और उदार प्रवृत्ति की निमलीबाई त्याग की मूर्ति है।

'पीली आंधी' की **राधाबाई** माधो से प्रेम करती है। माधो की शादी बीमार, काली और बदसूरत लड़की से होने पर वह दु:खी हो जाती है। लेकिन माधो की दूसरी शादी पद्मावती से होने पर ईर्ष्या से जल उठती है। अपने बेटे सांवर के भविष्य के लिए वह चिंतित होती है। पारंपारिक संस्कारों में जकड़ी, छूआछूत और अंधविश्वास को मानने वाली, ईर्ष्या से जलने वाली राधाबाई बेहद स्वार्थी है।

ऐसी ही स्वार्थी पात्र इसी उपन्यास की लता है। **लता** खुद को परिस्थितियों के अनुरूप नहीं ढलती, लेकिन परिस्थितियों को अपने अनुसार बना डालती है। वह सबके सामने अपनी बात को मजबूती से रखने की हिम्मत रखती है। वह अपनी इच्छाओं को सर्वोपरि मानती है। वह हर समय रूपयों की जोड़-तोड़ में लगी रहती है। घर का सारा हिसाब-किताब वही संभालती है। ऐसे दस-दस खाते संभालने की क्षमता उसमें है। संयुक्त परिवार की मिसाल बने रूंगटा परिवार में महाभारत खड़ा करना लता का सबसे बड़ा काम है। घर में ताई जी के रूपये चोरी हो जाते है, हालाँकि वह रूपये उसने चुराए हैं फिर भी वह रणचंडी की तरह विकराल रूप धारण करती है। धन कैसे दबाया जाय यह लता से अधिक कोई नहीं जानता। घर की एक से एक कीमती वस्तु वह पुरानी कहकर अपने कमरे में लाकर सजाती है। वह अपनी ताई सास की सेवा नहीं करती, परंतु उसकी मृत्यु के बाद दौलत के लिए बहू होने का अधिकार जताती है। लता स्त्री होकर स्त्री के दर्द को नहीं समझती।

'अपने-अपने चेहरे' उपन्यास की **प्रेमा** राजेंद्र गोयनका की पुत्रवधु व उमेश की पत्नी है। पढ़ी-लिखी आधुनिक विचारोंवाली प्रेमा नारी के स्वाभिमान को जिंदा रखती है । प्रेमा अपने पति के साथ ऑफिस भी संभालती है और घर भी। अपने आप को श्रेष्ठ साबित करने के लिए वह हमेशा प्रयासरत रहती है। प्रेमा जरूरत से ज्यादा व्यावहारिक है। वह रमा का बिगड़ा मूड़ ठीक करती है तो उससे द्वेष और स्पर्धा भी करती है। इतना ही नहीं माँ के घर आयी रीतू को हमेशा ससुराल का महत्व समझाती है। वह हर समय रीतू के लिए व्यंगयोक्ति पूर्ण कथनों का प्रयोग कर उसे दु:ख पहुँचाती है। प्रेमा नारी होकर नारी के दर्द न समझकर दु:खी नारी को और

दु:ख पहुँचाने में आनंद महसूस करती है। प्रेमा अपने अस्तित्व को स्थापित करने की क्षमता रखने वाली नारी के रूप में उभरी है।

प्रेमा की तरह नारी होकर भी नारी के दर्द को न समझनेवाली 'अग्निसंभवा' की आइवी की सास है। वह अपनी बेटी की ससुर द्वारा हत्या करते हुए देखती है पर विरोध नहीं कर पाती। अपनी पौत्री को भी अपने हाथों से मारती है। पुरुष की क्रुरता में उसका साथ देती है। पर उसका मन भी व्यथित होता है। वह आइवी से कहती है- "तुम्हारी तो एक बेटी मारी गयी और वह भी धीरे-धीरे। मेरी तो पहली बेटी को तुम्हारा ससुर पोखर में डुबो आया था। किसान के घर भला बेटी की क्या जरूरत? उन दिनों चीन के हमारे इलाके में भयंकर अकाल पड़ा हुआ था। पांच साल में तुम्हारे ससुर ने मेरी दो बेटियों को ऐसे ही मार डाला।"[47]

'अपने-अपने चेहरे' की **स्मिता** रमेश की पत्नी और गोयनका हाऊस की छोटी बहू है। वह रिश्तों में विश्वास रखती है। जो मुँह में आये उसे मुँह पर बोल देने वाली स्मिता को अपनी 'ओन' सास सरला अच्छी लगती है। रमा का लाड-प्यार उसे अच्छा नहीं लगता। स्मिता ऊपर से शांत है, पर उसे रीतू और सास सरला का व्यवहार एक ड्रामा लगता है। वह कहती है , "माँ-बेटी का सर आपस में भिड़ा दें। घर नहीं हुआ, मानों कोई 'स्टेज' हुआ। रोज नया ड्रामा।"[48]

स्मिता गोयनका हाऊस में सबकुछ जान कर भी अनजान बनी रहना चाहती है, बड़ों की भारी भरकम बातों को न समझने की चेष्टा करती है। इतना ही नहीं अपनी सास को मन लगाने के लिए काम करने की सलाह देती है। पति का घर छोड़ आयी रीतू को अपनी एक अलग जगह बनाने की सलाह देती है। स्मिता प्रेमा से ईर्ष्या करती है। उसका ऑफिस जाना उसे अच्छा नहीं लगता। वह प्रेमा से स्पर्धा करती है और बराबरी का स्तर बनाए रखने के लिए कॉलेज ज्वाईन कर लेती है।

प्रेमा जैसी चालाखी उसके पास नहीं है। इसलिए वह मन ही मन कुढ़ती है। वह एक सामान्य नारी के चरित्र के साथ खड़ी है। वह न तो किसी भी स्थिति का विरोध कर पाती है और न ही सहन कर पाने की क्षमता रखती है।

प्रभा खेतान के कुछ गौण नारी पात्र अत्यंत ईमानदार, मेहनती एवं स्वाभिमानी है। जिसमें 'छिन्नमस्ता' की दाई माँ है। जो बहुत ही स्वामिभक्त है। दाई माँ प्रिया के लिए सबकुछ थी। वह नारी की दयनीयता और लाचारी से प्रिया को परिचित कराती है। उसी तरह बड़े भैया द्वारा किए गए शारीरिक शोषण की बात को किसी से न कहने की सलाह देती है।

अपने आश्रयदाता की मृत्यु के बाद वह कस्तुरी देवी की सलाहकार सेविका, हमदर्द सब कुछ बन पूरी ईमानदारी के साथ घर के बच्चे और अन्य सदस्यों की सेवा करती है। लेकिन प्रिया के साथ उसके माता का व्यवहार देखकर उसका मन विद्रोह करता है। उसके समर्पित एवं ईमानदार व्यक्तित्व के बारे में डॉ.मधु सन्धु लिखती है- "दाई माँ का जीवन भी विचित्र है। जहाँ सत्ता के लिए कोई संग्राम नहीं, प्रेम का कोई प्रतिदान नहीं। मात्र समिधा बन हवनकुण्ड में स्वाहा होना ही जीवन सत्य है।"[49] ऐसी परंपरागत विचारों की पोषक दाई माँ परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेती है।

'अपने-अपने चेहरे' की सपना इसी तरह की पात्र है। सपना बालविधवा, स्वाभिमानी और मेहनती है। सम्पन्न घरों की स्त्री की तुलना में गरीब घरों की औंरते अधिक स्वतंत्र हैं। अपने निर्णय लेने में वे स्वतंत्र होती है। क्योंकि आजीविका अर्जन करने में उनकी बराबर की भागीदारी होती है। सपना धनाढ्य घर में काम करके आजीविका बटोरती है और अपने आत्मविश्वास तथा स्वाभिमान को बनाए रखती है। वह अपनी परिस्थितियों के अनुरूप निर्णय लेती है।

प्रभा खेतान के गौण नारी पात्रों में रेवा, प्रभा, श्याम बाबू की माँ, बहने, आरती, मृदूला, मनोरमा, रिया, वृंदा की माँ और सास, बिटिना, लारा, नैन्सी, त्रातस्की, इरीना, आदि पात्र गौण होते हुए भी उपन्यास को गतिशील बनाने में सहायक साबित हुए हैं।

3.2. पुरूष पात्र-

प्रभा खेतान का प्रत्येक पुरूष पात्र अपनी जगह मजबूती से खड़ा है। उनके सभी पात्र पाठक तक अपनी बात पहुँचाने में सफल हुए हैं।

3.2.1. प्रमुख पुरूष पात्र-

प्रभा खेतान के प्रमुख पुरूष पात्रो में मेहनत, संवेदनशीलता, दृढ़निश्चय, कर्तव्यपरायण, परिवारप्रिय, निडर, व्यवहारिक, मार्क्सवादी, अमीर, समाजभीरू, अहंकारी, भयग्रस्त एवं स्त्री विकास के विरोधी आदि विशेषताएँ दिखाई देती हैं। 'तालाबंदी' उपन्यास का प्रमुख पात्र **श्याम सुंदर अग्रवाल** उर्फ **श्याम बाबू** मेहनती इंसान है। दस वर्ष पहले श्याम बाबू सरावगी एक्सपोर्ट को मार्किन का थान सप्लाई करता था। अजित को साथ लेकर श्याम बाबू अपना काम शुरू करता है। यह काम बढ़ते-बढ़ते करोड़ों तक पहुँच जाता है। वह मानवीय रिश्तों के प्रति अति संवेदनशील है। वह परिवार के प्रति पूर्ण समर्पित है। बहनों का सहयोग, माँ की हर बात मानना, पत्नी के सुखों का ख्याल रखना आदि को वह अपना कर्तव्य समझता है। टूटकर भी रिश्ते निभाने में वह विश्वास रखता है। विपरीत परिस्थिति में जब उसकी मां बीमार हो जाती है तो वह और भी विचलित हो जाता है- "ओफ ! मां तुम ऐसे में मत चली आना। ऐसे मत जाना मां ! तुम्हारा सांवरा जिन्दगी-भर अपने को माफ नहीं कर सकेगा।"[50] अपने आप से की हुई ये बातें श्याम बाबू की अच्छाई और एक पुत्र के प्रेम को प्रकट करती है। श्याम बाबू अत्यंत भावुक पर अंदर से बेहद मजबूत है। मजदूर युनियन जब हथियारों से लैस जुलूस लेकर उसके घर जाती है तब भी श्याम बाबू हिम्मत के साथ बाहर आते है।

श्याम बाबू जहाँ परिवार के प्रति संवेदनशील है, वहीं फैक्ट्री के मजदूरों के प्रति भी पूर्ण सहयोगी है। वे मजदूर हित को सर्वोपरि मानते हैं। वे अपने ऑफिस के स्टाफ को इज्जत देते हैं। मार्क्सवाद के सिद्धांतों में उनकी आस्था है। वे मार्क्स को समझना चाहते हैं। वे अपनी उपलब्धियों पर गर्व करते हैं, लेकिन सफलता का पूरा श्रेय ईश्वर को देते हैं। वे मन में जो ठान लेते है उसे पूरा करके ही दम लेते है। वे अपने-आप को पूंजीपति नहीं मानते। वे तो अपने को सर्वहारा की पंक्ति में खड़ा हुआ महसूस करते हैं। उन्होंने अपने अधीनस्थों को कभी मालिक और मजदूर का रिश्ता महसूस नहीं होने दिया। श्याम बाबू अजीत से कहते हैं- "देखो, अजित, काम में मन लगाओ। मुझे 'सर' 'सर' बोलने वाला चमचा नहीं चाहिए। शार्गिद चाहिये। मैंने भी

जिन्दगी एक साधारण आदमी की तरह शुरू की थी। तुमसे मेरा अतीत छिपा है क्या?"[51]

परंपरागत और मारवाड़ी समाज की मानसिकता के स्थान पर श्याम बाबू में नई सोच और प्रगतिशीलता है। वह उन मारवाड़ियों में से नहीं थे जो केवल दलाली करते हैं। वे हरिनारायण चट्टोपाध्याय जैसे खांटी कम्युनिस्ट से मार्क्सवाद सीखते हैं। सोच-विचार करने पर उन्हें लगता है, "एक तरफ तो वह गोरी चमड़ी मेरा शोषण करती है और दूसरी तरफ मजदूर और सप्लायर।"[52] उनमें काम करने की क्षमता हैं। वे दृढ़ निश्चयी भी हैं। श्याम बाबू अपने संघर्षमय जीवन में कभी कमजोर पड़ जाते हैं, मगर परिस्थितियों के आगे घुटने नहीं टेकते और आखिर में हारी हुई बाजी जीत जाते हैं। वे जीवन के हर पड़ाव पर विजय के साथ जीने की कला सिखाते हैं। वे मनुष्य को जीवन की हर परिस्थिति से जूझने और जीने की प्रेरणा देते हैं।

परिवार प्रिय एवं संयमी **माधोदास रूंगटा** 'पीली आंधी' का प्रमुख पात्र है। वह सुजानगढ़ के गुरमुखराय रूंगटा का पोता एवं रामेश्वर का इकलौता बेटा है। वह अपनी ज्ञान पिपासा शीलबाबू के माध्यम से शांत करता है। वह नाथूराम की गद्दी पर बहीखाता लिखने का काम करता है। बड़े-से- बड़े तूफान के आगे भी वह झुकता नहीं है। दादा की मौत की खबर से भी उसका मन विचलित नहीं होता। डॉ. अग्रवाल माधो के संबंध में लिखती है, "माधो जैसा सरल, सहृदय व ईमानदार युवक भी महानगर के प्रतिस्पर्धात्मक परिवेश में टिके रहने के लिए चतुराई से काम करना सीख जाता है।"[53] किशोर अवस्था से ही माधो शांत और गंभीर हो गया है। गद्दी पर आए-गए की बातें सुनकर वह संसार को समझने की कोशिश करता है। वह अपने चाचा-चाची की इज्जत करता है। लालच में आकर वे माधो की शादी बीमार और बदसूरत लड़की से करते हैं फिर भी वह चुप ही रहता है। म्हालीराम की दूसरी शादी के प्रस्ताव से इन्कार कर कहता है, "चाचा, दूसरों की गलती की सजा उस बेचारी को क्यों मिले।"[54] किशोर शरीर में वृद्ध मन लिए माधो मेहनत करता है। दृढ़ निश्चयी माधो अपनी मेहनत के बलबूते पर कोलियारी का मालिक बन करोड़पति बन जाता है। संसार सुख से वंचित माधो पहली पत्नी की मृत्यु के बाद पद्मावती से विवाह

करता है। लेकिन पत्नी को मातृत्व सुख नहीं दे पाता। सारी अच्छाईयाँ होते हुए भी परंपरागत पुरूषी अहंकार उसमें है। इसलिए वह पत्नी पर रोक लगाता है साथ ही फिजूलखर्ची करने वाले सांवर को भी डाँटता है। अपनी मौत को नजदीक आते देख वह पन्नालाल को अपनी पत्नी तथा संपत्ति की जिम्मेदारी सौंपता है।

माधोदास रूंगटा में सभी मानवीय गुण मौजूद है, मगर दिल के किसी कोने में छोटी-छोटी मानवीय दुर्बलताएँ भी उसमें मौजूद है। माधो के मेहनती जीवन के बारे में डॉ. अग्रवाल लिखती है, "माधो एकाकीपन को दिन-रात अथक परिश्रम करके भरने का प्रयत्न करता है। वह भविष्य की अनिश्चितताओं से चिंतित रहता है, समाज के प्रति विरक्ति का अनुभव करता है तथा प्रचलित सामाजिक मान्यताओं व मूल्यों से उसका विश्वास उठने लगता है, उसका अपने प्रति लगाव भी कम होने लगता है।"[55] दृढ निश्चयी, मेहनती, परिश्रमी, माधो परिवार के लिए अपना जीवन स्वाहा कर देता है।

'तालाबंदी' के **शेखर मुखर्जी** मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित है। जीवन में उसे किसी प्रकार के भौतिक सुख की लालसा नहीं है। वह अपनी जमीन और घर दान में दे देता है। अभावों में हंसने की कला भी वह खूब जानता है। कॉमरेड की अनेक समस्याओं के बीच कवि मन रखने वाला शेखर मुखर्जी अपनी डायरी में कविताएँ लिखता है। वह बाहर से कठोर लेकिन अंदर से संवेदनशील है। रेवा से प्यार करते हुए भी वह शादी के बंधन में बंधना नहीं चाहता। उसके नेतृत्व में यूनियन का काम आठ साल से अच्छी तरह चल रहा है। वह निड़र है। मजदूर जब फैक्ट्री से माल नहीं उठाने नहीं देते तो वह दहाड़ता है- "माल उठाओ ! यह मेरा हुकूम है। यदि किसी में हिम्मत है, तो माल रोककर दिखाये। कल उसकी कटी हुई मुण्डी यहां सीढ़ियों पर बिछा दूंगा।"[56] शेखर मुखर्जी मार्क्स के सिद्धांतों का अंधानुकरण नहीं करना चाहता। मजदूरों का हित उसकी दृष्टि में सर्वोपरि है।

'अपने-अपने चेहरे' का **राजेंद्र गोयनका** एक महत्वाकांक्षी पुरूष है। उसकी शादी उसकी इच्छा के विरूद्ध अनपढ़ सरला से होती है। वह उसे शरीर से तो अपनाता है लेकिन मन से नहीं अपना पाता। बच्चों को घर पढ़ाने आई रमा में उसे

एक पूर्ण साथी दिखाई देती है। उसके सोये अरमान जाग उठते है। रमा के सहारे वह जीवन का सफर तय करना चाहता है। लेकिन समाज के डर से उसे स्वीकार नहीं कर पाता। अपनी बेटी रीतू के घर छोड़ आने पर वह संवेदनशील होकर उसकी दूसरी शादी करने का विचार करता है। लेकिन उसे अपने पैरों पर खड़े होने के लिए अपनी संपत्ति नहीं दे पाता। वास्तव में वह आधुनिकता की चादर ओढे सनातनी पुरूष है। वह स्त्री को पुरूष के बिना अधूरी मानता है। वह अपने आप में उलझा हुआ, सामाजिक बंधनों में जकड़ा हुआ ऐसा इंसान है जो कर्ता होने का दावा करता है मगर अपने जीवन में किसी मकसद को प्राप्त नहीं कर पाता। यह एक समाजभीरू पात्र है।

'एड्स' का भयग्रस्त **एण्डू** न्यूयार्क का व्यापारी महत्वाकांक्षी एवं अमीर है। विश्व के दस बड़े शहरों में उसने घर बनाए है। यहाँ तक कि आल्पस की सुनसान पहाड़ियों में भी उसका घर है, जहाँ वह खामोशी में जीने के लिए कई बार जाता है। वह जीना चाहता है, मगर जीवन की राहों में पत्नी द्वारा दिया गया धोखा और एड्स होने की संभावना उसे वहीं रोक देती है। वह इस भय से ग्रस्त रहता है कि कहीं उसे भी एड्स न हो गया हो। वह ऐसी अनजान दुनिया में भटकता रहता है, जहाँ उसे कोई नहीं जानता। उसके मन का भेद कोई न जान ले, इसलिए वह उसे जानने वालों से दूर भागता है। वह अपनी भावनाओं को मन में दबाए रखता है पर प्रभा के भावुक हृदय के सामने वह अपने दर्द को व्यक्त करता है। एण्डू अपने दु:ख को सहने में समर्थ है। वह नहीं चाहता कि उसको कोई दया भरी दृष्टि से देखे। उसके शब्दों में- "मुझपर दया मत करो.. मुझे किसीकी दया सहानुभूति नहीं चाहिए।"[57] वह अपने को छिपाए रखना चाहता है। उसके माध्यम से लेखिकाने एड्स ग्रस्त पत्नी के पति की मनोव्यथा को यथार्थ रूप में व्यक्त किया है।

इन सभी पात्रों के विपरीत 'छिन्नमस्ता' का **नरेंद्र** संवेदनाहीन, ऐय्याशी और अहंकारी है। उसे गरीब की पीड़ा छू भी नहीं पाती। वह पत्नी को गिनकर दिए पैसों का हिसाब माँगता है। पुरुष की मानसिक कुंठा नरेंद्र में भी है। वह एक आदर्श पत्नी की इच्छा रखता है लेकिन जब प्रिया पुरुष के कार्य-जगत में प्रवेश करती है और सफलता उसके कदम चूमने लगती है तो नरेंद्र क्रोधित होता है।

प्रिया से संबंध विच्छेद होने पर वह गलत रास्ते पर चल पड़ता है। वह अपने पिता से भी संघर्ष करता है, पिता की रखैल तिलोत्तमा तथा उनकी अवैध संतान नीना की वह उपेक्षा करता है। दफ्तर की नौकरी पेशा नारी को गर्भ गिराने के लिए पैसा देता है। ये सारी घटनाएँ नरेंद्र की विकृतियों की निर्देशक हैं। नरेंद्र के बारे में क्षितीज यादवराव धुमाल जी कहते हैं - "नरेंद्र यह पात्र मारवाड़ी समाज की पुरुष प्रधान संस्कृति के अहं का पक्षधर है। इस अहं के कारण वह बार-बार अपनी पत्नी प्रिया पर हावी होता है। वह सेक्स प्रधान संस्कृति का वाहक, नारी-आहुति परंपरा का पक्षधर, विवाह-बाह्य सम्बन्धों में रूचि रखनेवाला पूँजीपति, पत्नी के स्वावलंबन का विरोधी, पत्नी पर दबाव रखनेवाला पुरानी परंपरा का वाहक है।"[58]

नरेंद्र अपने अहम् में अंधा होकर मानवीय मूल्यों को खो देता है। अपनी हवस मिटाने के लिए पाशविक हद तक जानेवाला यह पुरुष पात्र उन पुरुषों का प्रतिनिधित्व कर रहा है जिनमें अपने पुरुष होने का अहं होता है।

3.2.2. गौण पुरूष पात्र

प्रभा खेतान के उपन्यासों के गौण पुरूष पात्रों में अहंकार, मेहनत, स्त्री लंपट, स्वार्थी, कमजोर, नारी का आदर करनेवाला, भ्रष्ट, चापलुस, ईमानदार, बेईमान, शांत, कायर, समाजभीरू एवं सुविधाभोगी आदि अलग-अलग विशेषताएँ दिखाई देती है।

'आओ पेपे, घर चलें' के **डॉ.डी** लॉस एंजेल्स के एक प्रसिद्ध डॉक्टर एवं एलिजा का पति है। वह सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए अपनी पत्नी का साथ तो देता है, पर उसे प्यार नहीं दे पाता। पत्नी के पूर्ण समर्पण के बाद भी प्रसिद्ध अदाकारा क्लारा ब्राऊन के प्यार में डूबा रहता है। आखिर में पत्नी को धोखे से पागलपन का आरोप लगाकर तलाक के लिए विवश कर देता है। सिर्फ और सिर्फ अपने लिए जीना, नारी की भावनाओं को उसकी कमजोरी समझना, अपनी सोसायटी के बीच नारी को उपेक्षित करना आदि डॉ. डी. के स्वभाव की विशेषताएँ है।

'छिन्नमस्ता' का **विजय** सुविधाभोगी पुरूष है। पाश्चात्य संस्कृति के रंग में रंगा यह इंसान अपनी मर्यादाओं को भी लांघ जाता है। पत्नी को वह चरित्रहीन लगता है। विजय पिता की मृत्यु के बाद किसी प्रकार अपनी माँ को बहला-फुसलाकर अपने छोटे

भाई का हिस्सा हड़प लेता है और घर पर अपनी हुकुमत चलाता है। कुछ लोग छोटे-से-छोटे सुख को पाने के लिए अपने अधिकारों की परिधि को लांघ जाते हैं। उनकी अपनी खुशी कई लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण लम्हों को दबा देती है। उपन्यास के विजय का चरित्र भी इसी कोटि का है। वह अपनी हवस की शिकार एक मासूम बच्ची को बनाता है। यह बच्ची और कोई नहीं, उसी की छोटी बहन है, जिसकी बगिया महकने से पहले ही अपने भाई द्वारा उजड़ जाती है। विजय निहायत स्वार्थी व्यक्ति है।

'पीली आंधी' का **साँवरमल** किशन और राधाबाई का इकलौता पुत्र है। वह सुविधाभोगी शिक्षित युवक है। वह भाई द्वारा कमाए हुए पैसों पर अय्याशी करता है और सभी बुरी लतों का शिकार हो जाता है। बंगाल के जमींदारों की रईसी से प्रभावित होकर वह खुद भी उसी रास्ते पर चलने लगता है। उच्छृंखल सांवर अपने भाई के सामने मुँह खोलने की हिम्मत नहीं कर पाता और न हीं भाई के काम आता है।स्त्री को मात्र भोग की वस्तु समझनेवाला और संकीर्ण सोच रखने वाला सांवरमल अपनी पत्नी की उपेक्षा करता है। वह पर स्त्री के लिए पानी की तरह पैसा बहाता है। अपनी भाभी के प्रति भी बुरा व्यवहार करता है। अपनी परस्त्रीगमन और शराब आदि बुरी आदतों के कारण उसका अंत होता है।

इसी उपन्यास का **सुंदरलाल** सुविधाभोगी, ऐय्याशी और कायर है। वह अपने ताऊ द्वारा कमाई हुई दौलत को पानी की तरह बहाता है। वह परिवार की जिम्मेदारी से भागता है। चाहे धन हो या बाजार में बैठी स्त्री, वह अधिक से अधिक उसे भोगने की इच्छा रखता है। **मोहन** भी सुंदरलाल की तरह निहायत ही लालची पुरूष हैं। अपनी बड़ी माँ के सामने वह विनम्र रहता है, उसकी हर बात को शिरोधार्य रखता है, लेकिन पुरूष की पर नारी पर नजर रखनेवाली प्रवृत्ति मोहन में भी मौजूद है। पत्नी के सामने वह उसकी छोटी बहन से प्यार भरी बातें करता है। इसका छोटा भाई **गौतम** चाहता है कि उसकी पत्नी सिर्फ उसके प्रति समर्पित रहे, मगर वह स्वयं ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं। वह सोचता है कि वह पुरूष है इसलिए कुछ भी कर सकता है। गौतम कायर पुरूष है, पर पत्नी के सामने बहादुरी का नाटक करता है।

'स्त्री-पक्ष' का **सुमित** वृंदा का पति सर्जन बन जाता है। पैसे की उसके पास कोई कमी नहीं रहती। वह पत्नी और बच्चों को प्यार तो करता है परंतु अपने प्यार का उनसे हिसाब भी मांगता है। वह पत्नी के प्रति पूर्ण वफादार होने का दावा तो करता है लेकिन पत्नी से कहता है- "वृंदा! पति-पत्नी के रिश्ते में एक अनकहा साझा होना चाहिए - यदि मैं तुम्हें और बच्चों को ताउम्र सम्हाल कर रखता हूं तो इसके ऐवज में तुम्हें मुझको थोड़ी बहुत छूट तो देनी होगी! वृंदा तुम जानती हो मुझे औरतों का साथ अच्छा लगता है, क्या हर्ज है यदि पार्टियों में जरा हंस बोल लिए।"[59] सुमित चाहता है कि उसकी पत्नी सिर्फ घर में कैद होकर रहे। शादी के 15 वर्ष बाद अचानक वह पत्नी को तलाक दे देता है और अलग रहने लगता है। सुमित के माध्यम से दकियानूसी सोच वाले पुरूष को चित्रित किया गया है।

'छिन्नमस्ता' का **कुणाल** रीतू का पति एवं राजेंद्र गोयनका का दामाद अपनी इच्छानुसार जीने वाला पुरूष है। वह अपनी इच्छाओं को सबसे अधिक महत्व देता है। वह अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता है और उसे सभी सुविधाएँ देता है। वह रीतू की सभी जरूरतों को पूरा करते हुए दूसरी स्त्री से संबंध रखता है। शादी के बाद दूसरी स्त्री से प्यार को वह सही मानता है। वह मानता है कि विवाहेतर संबंध सदियों से विद्यमान रहे हैं और इसमें कुछ गलत नहीं है। इसी सोच के चलते वह सोलह साल के सुखमय वैवाहिक जीवन को दांव पर लगा देता है। वह पर स्त्री से प्यार करने लगता है, पत्नी को घर से निकाल देता है तथा अपने इकलौते बेटे को अपने तर्कों से अपने पक्ष में कर लेता है। कुणाल अपने सुख के लिए जीने वाला स्वार्थी व्यक्ति है।

'स्त्री-पक्ष' उपन्यास का **अनीश** स्त्री को केवल भोग की वस्तु मानता है। उसके पास पैसे की कोई कमी नहीं है । वह वृंदा से गहरी दोस्ती जताता है और दोस्ती की आड़ में उसके शरीर पर नजर रखता है। मगर वृंदा ऐसा होने नहीं देती। इससे अनीश बौखला उठता है। वह नए साल के उपलक्ष्य में रखी पार्टी में वृंदा की उपेक्षा करता है। इस प्रकार अनीश पुरूषों की घटिया सोच का परिचायक है।

उपर्युक्त सभी पात्र स्त्री को भोग की वस्तु मानते हैं। इन पात्रों के अलावा प्रभा के उपन्यासों में ऐसे पुरूष पात्र भी पाये जाते हैं। जो केवल अपने आप को श्रेष्ठ मानते है। जो अत्यंत क्रूर और संवेदनाहीन है।

'आओ पेपे, घर चलें' के **डॉ.बेरी** हेल्गा पति है। वह अपने बच्चों की हर इच्छा को पूर्ण करता हैं। विपरीत परिस्थितियों में एक लड़की के प्रति हमदर्दी और फिर उसे अपनी जीवन संगिनी बनाकर समाज में सम्मान दिलाना चाहता है पर वह अपनी पत्नी हेल्गा की छोटी-छोटी बातों पर भी रोक लगाता है। इस उपन्यास का साइकियाट्रिस्ट **डॉ.ब्रेडले मूर** अपनी प्रथम पत्नी को तलाक देकर कैथरिन से ब्याह करते है। आर्थिक संपन्नता के लिए रात-दिन मेहनत करने वाले डॉ.मूर व्यक्ति की स्वतंत्रता को प्राथमिकता देते हैं। वे पत्नी के काम-काज के बीच नहीं आते किंतु पुरुष के अहं के कारण वे अपनी पत्नी को आगे नहीं बढ़ाना चाहते। पत्नी का नौकरी करना उन्हें मान्य नहीं। इसीलिए वे सौंदर्य प्रसाधनों एवं अधिकाधिक शॉपिंग में व्यस्त पत्नी को पैसे के लिए कभी नहीं टोकते। उनके विचारों में पत्नी औरतपन से ऊपर न उठ सके और इन्हीं चीजों से उलझकर उसका जीवन पति से जुड़ा रहे। उपन्यास के पुरुष पात्रों में डॉ.मूर विशिष्ट व्यक्तित्व को प्रस्तुत करते हैं।

'अग्निसंभवा' का अवसरवादी **मि.शिव** मि.डिक्रे की 'स्टैंडबाई कम्पनी' की हाँगकाँग ब्राँच का मॅनेजर है। वह अपने लिए जीना चाहता है। दूसरों के बारे में सोचने के लिए उसके पास वक्त नहीं हैं। कैंसर ग्रस्त पत्नी तथा बच्चों की उपेक्षा कर भौतिक सुविधाओं के पीछे दौड़ने वाला शिव जहाज कम्पनी के लेन-देन में घोटाला करता है। उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है। कभी-कभी दूसरों पर दया दिखाने वाले शिव का चरित्र विरोधाभास से युक्त है। वह बेहद स्वार्थी, संवेदनाहीन, लालची एवं बेईमान है।

मि.शिव की तरह संवेदनाहीन एवं क्रूर पात्र इसी उपन्यास का **आइवी का शराबी पति** है। वह अपनी पत्नी को बंधुआ मजदूर की तरह पीटता है। वह दिन-रात लाल किताब लिए विश्व क्रांति की बातें करता रहता है। वह अपनी ही आँखों के आगे बेटी को मरती हुई देखता है और पत्नी से कहता है, "यदि लड़का पैदा नहीं किया तो

पहली बार बच्ची को मारा गया था, अबकी तुमको भी मार डालूंगा।"[60] 'एड्स' का **हैम्प** पेट्रा का पति संवेदनाहीन व्यक्ति है। व्यापार में आई मंदी से वह चिंतित है। वह पत्नी से हर वक्त चिपका रहता है लेकिन बेटे के मोह से विचलित नहीं होता। वह युद्ध का समर्थन करता है और सद्दाम को खत्म करना चाहता है। इसी उपन्यास का जर्मन व्यापारी **श्वार्ज** कुक्कू का पति है। उसके जीवन में भटकन है और वह अपने मन को एक जगह स्थिर नहीं रख पाता। वह रिश्तों में विश्वास नहीं रखता मगर मुसीबत में फँसे व्यक्ति का साथ देता है।

'अपने-अपने चेहरे' का **रमेश** राजेंद्र गोयनका का छोटा बेटा है। अमरिका में पढ़ा रमेश एक खुदगर्ज इंसान है। रमा के त्याग से उसका कैरियर बनता है। रमा से सबकुछ प्राप्त करने के बाद वह धीरे से हट जाता है। रमा के बलिदान का बदला चुकाना तो दूर, वह उससे बात तक नहीं करता। वह अपनी माँ की दुर्दशा के लिए रमा को जिम्मेदार मानता है। वह घरेलू जिम्मेदारियों को नहीं समझता। ऐसा ही स्वार्थी पात्र इसी उपन्यास का **उमेश** है। परिवार के प्रति अपने दायित्व को वह महत्व नहीं देता। वह स्वार्थी व्यक्ति है। वह दूसरों की समस्याओं का ध्यान नहीं रखता। यहाँ तक कि वह अपने घर की समस्याओं से भी बड़ी आसानी से किनारा कर जाता है।

प्रभा के उपन्यासों में ईमानदार, मेहनती, महत्वकांक्षी, देशप्रेमी, संवेदनशील, दयालु पात्र भी पाए जाते हैं। 'तालाबंदी' का वफादार **अजित** 'यूनिटेक एक्सपोर्ट' का जनरल मैनेजर एवं श्याम बाबू का दाहिना हाथ है। वह किसी राजनीतिक पार्टी में विश्वास नहीं करता और मजदूर-मालिक के संबंध को उचित मानता है। अजित साफ-सुथरी छवि का व्यक्ति है। कर्म में ही विश्वास करता है। अजित के अनुसार होनहार लड़के राजनीति के चक्कर में अपना भविष्य बिगाड़ लेते है। अतः वह खुद राजनीति से हमेशा दूर रहता है। उसका अनुभव कहता है, "बाबा को तो ठाकुर दादा का बनाया हुआ घर भी राजनीति के चलते छोड़ना पड़ा। इन लाल झण्डे वालों ने तो गांव का गांव हड़प लिया। जिसने इसकी बात नहीं मानी, काटकर मुण्डी फेंक दी।

सर, मैं तो हर रंग के झण्डे से डरने लगा हूँ।"[61] मालिक-मजदूर के बीच वह किसी मध्यस्थ की आवश्यकता महसूस नहीं करता।

इसी उपन्यास का सच्चा एवं ईमान का पक्का **रफीक अहमद** निर्भीक एवं मेरठ जिले का खानदानी आदमी है। कुछ समस्याओं के कारण वह कोई स्थायी काम नहीं कर पाता। मेहनती रफीक अच्छाई का साथ देता है और जरूरत पड़ने पर शारीरिक बल से रक्षात्मक कदम भी उठाता है। 'पीली आंधी' का **भीखन** रफीक अहमद की तरह पात्र है। वह गैंरो के दु:ख दर्द में काम आनेवाला दरियादिल इंसान है। वह पढ़ा लिखा नहीं है, पर व्यवहारिक ज्ञान उसके पास है। ईमानदार और मेहनती भीखन सबको अपना समझकर चलता है। वह किशन और माधो की सहायता करता है। इसी उपन्यास का ओझाजी सेवाभावी और स्वाभिमानी व्यक्ति है। कहने को तो वह माधो बाबू का कुछ नहीं मगर उसके सुख-दु:ख का साक्षी रहा है।

स्त्री को सम्मान देनेवाला 'छिन्नमस्ता' का **फिलिप** है। उसके मन में स्त्री के प्रति इज्जत का भाव है। वह चाहता है कि स्त्री अपने आप से प्यार करना सीखे। प्रिया उसकी अच्छी सप्लायर है मगर दोस्ती को जिंदा रखने के लिए वह प्रिया से व्यापाराना संबंध तोड़ता है। वह चाहता है कि व्यापारिक उलझनों से दोस्ती में खटास न पड़े। वह अपनी पत्नी को अपने बराबर की जमीन पर खड़ा देखना चाहता है। वह प्रिया का भी आत्मबल बढ़ाता है। ऐसा ही पात्र 'स्त्री-पक्ष 'में **जावेद** है। वह ईमानदार युवक है। वृंदा का सहपाठी जावेद एक हादसे से वृंदा को बचाता है। वृंदा से पवित्र दोस्ती करता है और दोस्ती का फर्ज भी निभाता है। गरीब होते हुए भी वह स्वाभिमानी है। स्त्री के प्रति इसकी सोच अन्य पुरूषों से हटकर है। वह स्त्री को भोग की नजर से नहीं देखता, बल्कि एक इंसान के रूप में देखता है। वह वृंदा से कहता है कि दुनिया के कहने से क्या होता है, यदि तुम खुद सही हो तो चाहे कोई कुछ भी कहता रहे।

'पीली आंधी' का **प्रो.सुजीत सेन** मानवीय गुणों से भरपूर संवेदनशील पुरूष है। वह समाज की मर्यादा का ध्यान रखता है किंतु जहाँ समाज इंसान की इच्छाओं का दमन करने लग जाए वहाँ वह उससे ऊपर उठ जाता है। जो जिसकी इच्छा है उसे

वह पूरा करे और स्वाभिमान से जीये, यही सुजीत के सुलझे हुए विचार थे। 'अग्निसंभवा' के 'स्टैंडबाई कंपनी' के **डिक्रे** स्वाभिमानी पात्र है। शिव और आइवी इसी कम्पनी में कार्यरत हैं। डिक्रे प्रभा की कम्पनी के दस्तानों का ग्राहक है। तेज-तर्रार दिमाग वाला डच व्यापारी डिक्रे गुणग्राही व्यक्ति है। वह आइवी की ईमानदारी से प्रभावित होकर शिव की सेक्रेटरी के रूप में उसे रख लेता है। डिक्रे संवेदनशील भी है, वह दूसरों की पीड़ा को महसूस करता है। स्वाभिमान की रक्षा के लिए वह हमेशा सतर्क रहता है। इस प्रकार डिक्रे मेहनती, बुद्धिमानी, गुणग्राही, संवेदनशील एवं स्वाभिमानी पात्र है।

'तालाबंदी' का **विक्रम** मेहनती तो है पर चापलूस भी है। वह साधारण परिवार का और करोड़पति श्यामसुंदर अग्रवाल का आज्ञाकारी भांजा है। वह काम सीखकर मामा को रिझाने के प्रयास करता है। अपने भविष्य को संवारने के लिए अपने मामा श्याम बाबू की हर कड़वी बात भी वह बड़ी शांति से पी जाता है, क्योंकि उसकी नजर मामा के फैले हुए कारोबार पर है। वह व्यवहार कुशल है। इसी उपन्यास का **पीनू** अवसरवादी एवं दोगली नीति का भ्रष्ट नेता है। कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होकर मंच पर भाषण बड़े जोर-शोर से देता है, मगर इसका मकसद केवल भौतिक साधनों को उपलब्ध करना है। पीनू पूर्णतः स्वार्थी है।

डरावने व्यक्तित्ववाला एवं महत्वाकांक्षी **सुप्रिय** इसी उपन्यास का पात्र है। जो फैक्ट्री में काम करता है। उसमें योजनाबद्ध तरीके से अपने लक्ष्य तक पहुँचने की क्षमता है। बड़ा लीडर बनने की चाह में वह मजदूर यूनियन में फूट डालकर अपनी अलग यूनियन गठित करता है, किंतु असफल होता है। 'स्त्री-पक्ष' का **आर्जव** सुशील और आकर्षक व्यक्तित्व वाला युवक है। वह जीवन संघर्ष में रत है। आर्जव जितनी सावधानी से अपना ब्रश चलाता है उतने ही प्यार से जिम्मेदारी संभालता है। उम्र में अपने से बड़ी एवं दो बच्चों की माँ वृंदा से उसे प्यार हो जाता है। वृंदा के प्रति इसका निश्चल प्रेम उसके बच्चों को भी अपनाता है। आर्जव स्वाभिमानी युवक है और वृंदा पर निर्भर नहीं रहना चाहता। अतः वह अपनी रोजी-रोटी की खोज में रहता है। जब मुंबई में बड़ी कम्पनी का ऑफर उसे मिलता है तो सबकुछ छोड़कर वह अपने

काम के लिए निकल पड़ता है। वह वृंदा को साथ ले जाना चाहता है, मगर वृंदा मना कर देती है।

युवा नेतृत्व करनेवाला 'अग्निसंभवा' का आइवी का इकलौता बेटा **वॉग** बीजिंग विश्वविद्यालय में अध्ययनरत है। देशप्रेम की भावना उसकी रगों में लहू के साथ दौड़ती है। वह वैचारिक स्वतंत्रता की मांग उठानेवाले छोटे से दल का सदस्य है। वह कहता है- "मैं एक किसान का बेटा हूं और दुनिया के हर किसान का दर्द समझता हूं। किसान को अपनी उस जमीन से बेहद लगाव होता है जिस पर वह खेती करता है।"[62] सत्ता की जनविरोधी चाल पर वॉग का मानस व्यथित होता है। युवा वर्ग के आक्रोश को वॉग व्यक्त करता है। राष्ट्रों के आपसी संघर्ष में जनता पीसी जाती है। यही पीड़ा वॉग के शब्दों में व्यक्त होती है- "दुनिया को बस चार हिस्सों में काट दूं- उत्तर, दक्षिण, पूरब, और पश्चिम। राष्ट्रों की ये सीमाये जबरदस्ती बनायी गयी हैं। ये सारे युद्ध खत्म हो जायेंगे यदि हम राष्ट्रों की सीमाएं तोड़ दें। सेना की जरूरत खत्म हो जाये, हथियारों का उत्पादन बंद हो जाये।"[63] वॉग एक संवेदनशील एवं देशप्रेमी पात्र है। ऐसा ही पात्र 'पीली आंधी 'में दयालु प्रवृत्ति के एवं क्रांतिकारी विचारों के **शील बाबू** है। वे बंगाली है और किशन की सहायता करते हैं। वे माधो को शिक्षा के मार्ग पर ले जाने का प्रयास करते हैं।

इस पात्र के विपरीत 'तालाबंदी' का **पप्पू** है। करोड़पति श्याम बाबू की इकलौती संतान पप्पू को सभी सुख-सुविधाएँ प्राप्त है। अपनी इच्छाओं को सर्वोपरि मानने वाला यह लड़का दूसरों की भावनाओं एवं समस्याओं को समझने की क्षमता नहीं रखता। वह अपने पिता से कहता है- "पापा, आप हयूमन नहीं। आपके लिए घर, परिवार किसी का कोई महत्व नहीं। मम्मी बोलती नहीं। उनको आपसे डर लगता है, पर आप? आप तो अपने व्यवसाय के अलावा कुछ और सोच ही नहीं पातें।"[64] पप्पू घमंडी और संवेदनाहीन है।

आधुनिक विचारवाले 'छिन्नमस्ता' का **सावंरमल गुप्ता** शांत, सहृदय, ईमानदार, मेहनती, सादगी पसंद एवं फर्राटे से अंग्रेजी बोलने वाला बालीगंज का जिनियस व्यक्ति है। वह लड़का-लड़की में भेद नहीं करता। वह अपने बच्चों को शिक्षा देने एवं

स्वतंत्रता देने के पक्ष में हैं। इसी उपन्यास के करोड़पति **मि.अग्रवाल** सौम्य, शांत, स्निग्ध, कायर तथा मानवीय गुणों की अच्छाईयों को धारण करने वाले गंभीर मारवाड़ी पुरुष है। समाज से डरने वाले मि.अग्रवाल अपनी दूसरी पत्नी तिलोत्तमा का तथा नाजायज संतान नीना का सबके सामने स्वीकार नहीं करते। इसी उपन्यास का **अजय** भी कायर है।

कमजोर एवं पलायनवादी 'पीली आंधी'का **किशनचंद रूंगटा** है। वह आज्ञाकारी भाई और बेटा है। रामेश्वर को धाड़ेती मार देते हैं, तब वह ठोस निर्णय नहीं ले पाता और असहाय बाप-माँ एवं बीमार भाभी को बेसहारा छोड़कर चला जाता है। बस अपने खानदान की साख बनाए रखने का झूठा प्रयास करता है। अमीर बनने की लालच में किशन को बुरी लत लग जाती है। जिसमें उसे भारी घाटा होता है। इस सदमें में वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है और छत से कूदकर अपना जीवन समाप्त कर लेता है।

इन पात्रों के अलावा डॉ.चोपडा, लॉरेन्स, जॉर्ज हेसे (आओ पेपे, घर चलें), बूढ़ा रंगबहादूर, थापा (तालाबंदी') नत्थु महाराज, मि.गोयनका के वकील दोस्त (अपने-अपने चेहरे) म्हालीराम (पीली आंधी), वृंदा के पिता, बेटा रचित (स्त्री-पक्ष) आदि पात्र भी कथ्य के विकास में सहायक हैं। इस प्रकार प्रभा खेतान के सभी प्रमुख नारी पात्र और गौण नारी पात्र तथा प्रमुख पुरूष पात्र और गौण पुरूष पात्र अपनी चारित्रिक विशेषताओं के कारण पाठक को प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष -

प्रभा खेतान के सभी उपन्यासों में नारी पात्र प्रबलता के साथ अंकित किए गए है। इन उपन्यासों में नारी पात्रों के मुख्यत: तीन रूप चित्रित हुए हैं। प्रथम रूप में सदियों से चली आ रही शोषण और अत्याचार की स्थितियों की शिकार बनी नारी। इनमें पद्मावती, राधाबाई, निमलीबाई, कस्तुरी देवी, सुमित्रा आदि प्रमुख हैं। दूसरे रूप में नयी परिस्थितियों से उत्पन्न हुई समस्याओं से जूझती नारी है। उनमें एलिजा, श्रीमती गोयनका, बडी भाभी, चित्रा, तिलोत्तमा, आदि महत्वपूर्ण हैं। तीसरे रूप में आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होकर परंपरागत नारी संहिता की जकड़न को चुनौती देती

और स्वयं को स्वावलंबी बनाती नारी का चित्रण है। वह पूँजीवादी समाज में संस्कारों और आर्थिक विषमताओं से संघर्ष कर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करती है। वह परंपरा और रूढ़ियों को तोड़ती हुई अपनी स्वतंत्रता के लिए जूझती हुई दिखाई देती है। इनमें प्रिया, रमा,सोमा, आइवी, आदि का समावेश होता हैं।

प्रभा खेतान के कुछ नारी पात्र परंपरा प्रिय है। जो संस्कारों के बंधन में जकड़े हुए हैं। उनमें कस्तुरीदेवी, सुमित्रा, पद्मावती, मिसेस एलिजा, श्रीमती गोयनका आदि नारी पात्र हैं। बंधन को नकार कर पूरी तरह से विद्रोह करनेवाली नारियाँ भी प्रभा जी के उपन्यासों में दृष्टिगोचर होती हैं - जैसे प्रभा, मरील, हेल्गा, आइलिन कैथी, रेवा, आइवी, प्रिया, सोमा, रमा, नीना,वृंदा, देविका, पिंकी आदि। कुछ नारी पात्र पूरी तरह त्याग की मूर्ति के रूप में दृष्टव्य है। ये अपने परिवार के लिए सबकुछ समर्पित करने को तैयार है। प्रभा जी के कुछ नारी पात्र राष्ट्र प्रेम से भरपूर है, तो दूसरी ओर परिवार को महत्व न देकर अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत नारी पात्र भी है। कुछ नारियाँ तो अपने प्रेम के झाँसे में पुरूष को फँसाने का काम करती है। तो किसी नारी पात्र में लोभ दिखाई देता है।

प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी पात्रों के साथ साथ पुरूष पात्रों का स्थान भी महत्वपूर्ण है। उनमे ऐय्याशी, स्त्री-लंपट पात्र है, जो पत्नी को भोग्य वस्तु समझकर उसके साथ दुव्यवर्हार करते हैं। दूसरी ओर परिवार के लिए सबकुछ न्यौछावर करने वाले पुरूष भी दिखाई देते है। इनमें डॉ. बेरी, डॉ. ब्रेडले मूर, श्यामसुंदर अग्रवाल, माधोदास रूंगटा, एण्डू आदि प्रमुख है। प्रभा खेतान ने स्वार्थी, ईमानदार, स्त्री की इज्जत करने वाले पुरूष पात्रों का भी स्वाभाविक चित्रण किया है।

इस प्रकार प्रभा खेतान के उपन्यासों में भारतीय समाज के ही नहीं बल्कि विश्व समाज के सभी प्रकार के पात्र दिखाई देते हैं। उनके उपन्यासों में मानव जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। प्रभा जी के उपन्यासों के पात्र समाज से ही उठाए गए है। उनके सभी पात्रों में मनुष्य में पायी जाने वाली विशेषताएँ एवं कमियाँ दिखाई देती हैं। उन्होंने अधिकांशत: मारवाड़ी समाज के जीवन को चित्रित किया है। इन पात्रों में मारवाड़ी समाज के संस्कार एवं जीवन पद्धति के दर्शन होते हैं। कुछ पात्र नवीन

विचारों को अपनाकर समाज में कुछ नया विचार स्थापित करने वाले दिखाई देते हैं। जैसे प्रभा अपने मारवाड़ी समाज में ब्युटी थेरोपी का नया चलन ले जाती है। अपने समाज की रक्षा के लिए हेल्गा अपने परिवार की परवाह नहीं करती। आइलिन तो दो पति और पाँच प्रेमियों के साथ जीवनयापन करती है। मरील पति को छोड़कर अपने अस्तित्व को महत्व देती है। रेवा शेखर से विवाह न करते हुए उसके साथ रहती है। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया नीना, 'पीली आंधी' की सोमा, चित्रा, 'अपने-अपने चेहरे' की रमा एवं 'स्त्री-पक्ष' की वृंदा जैसे सभी पात्र अपने अस्तित्व स्थापन के साथ-साथ समाज को नये विचारों की ओर ले जाने के लिए प्रेरित करते हैं।

प्रभा जी के उपन्यासों के पात्रों में हमें सजीवता सप्राणता, सहृदयता, मौलिकता, सशक्तता, यथार्थता, अंर्तव्दंद, बौद्धिकता, स्वाभाविकता, अनुकुलता आदि गुण भी दिखाई देते है। वे हमारे अंतर्मन को झकझोर कर रख देते हैं। ये पात्र हमारे मन-मस्तिष्क पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं। वे हमें सोचने के लिए मजबूर करते हैं। वे नई दिशा में कदम उठाने के लिए प्रेरणा देते हुए समाज की सच्चाई को हमारे सामने प्रकट करते हैं।

संदर्भसूची-

1. प्रेमचंद और हरिनारायण आपटे के उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक चिंतन, जाधव एस.एस- प्र.सं.2007, पृ.20
2. उपन्यासकार मधुकर सिंह, डॉ.नवले संजय, प्र.सं.2004, पृ.85
3. श्री वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यासों में नायिका परिकल्पना, इन्दिराबाई पी.के.- पृ.8
4. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ.62-63
5. वही, पृ.40
6. अग्निसंभवा, हंस, प्रभा खेतान, अप्रैल 1992, पृ.58
7. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, हंस, मार्च 1992, पृ.56
8. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, हंस, मई 1992, पृ.62
9. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, हंस, मार्च 1992, पृ.63
10. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ.अशोक मराठे, पृ.116
11. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.99
12. प्रभा खेतान के उपन्यास में नारी, डॉ.अशोक मराठे, पृ.120
13. वही, पृ.120
14. वही, पृ.122
15. हिंदी की महिला उपन्यासकार और नारीवादी दृष्टि, डॉ.अमरज्योति, पृ.67
16. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ.149
17. वही, पृ.126
18. वही, पृ.182
19. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ.177
20. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ.अशोक मराठे, पृ.135
21. वही, पृ.135-136
22. वही, पृ.136

23. स्त्री-पक्ष, प्रभा खेतान, जनसत्ता सबरंग, 14 फरवरी, 1999, पृ.22 दूसरी कड़ी, पृ.22
24. वही, पृ.23
25. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.55
26. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ.95
27. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ.अशोक मराठे, पृ.136
28. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ.133
29. वही, पृ.139
30. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ.27
31. वही, पृ.45
32. वही, पृ.94
33. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, हंस, अप्रैल 1992, पृ.76
34. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, हंस, अप्रैल 1992, पृ.78
35. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ.24
36. वही, पृ.25
37. वही, पृ.35
38. वही, पृ.54
39. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ.अशोक मराठे, पृ.109-110
40. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ.87
41. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ.125
42. स्त्री-पक्ष, प्रभा खेतान, जनसत्ता सबरंग, 30 मई 1999, सोलहवीं कड़ी, पृ.20
43. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ.255
44. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ.अशोक मराठे, पृ.118
45. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ.73
46. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ.अशोक मराठे, पृ.126

47. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, हंस, अप्रैल 1992, पृ.58
48. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ.128
49. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ.अशोक मराठे, पृ.124
50. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.58
51. वही, पृ.15
52. वही, पृ.48
53. 'विकास संस्कृति', 'पत्रिका', संदीप सिंह, समीक्षा, अप्रैल-मई-जून, 2012, पृ.18
54. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ.83
55. 'विकास संस्कृति', 'पत्रिका', संपा, संदिप सिंह, अप्रैल-मई-जून, 2012, पृ.18
56. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.59
57. एड्स, प्रभा खेतान, 'आज' पूजा वार्षिकांक, पृष्ठ.83
58. बीसवी सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक अनुशीलन, क्षितीज यादवराव धुमाळ, पृ.223
59. स्त्री-पक्ष, प्रभा खेतान, जनसत्ता सबरंग, 16 मई 1999, पृ.22
60. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, हंस, अप्रैल 1992, पृ.58
61. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.20
62. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, हंस, मार्च 1992, पृ.57
63. वही-पृष्ठ-57
64. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.80